मार्को पोलो

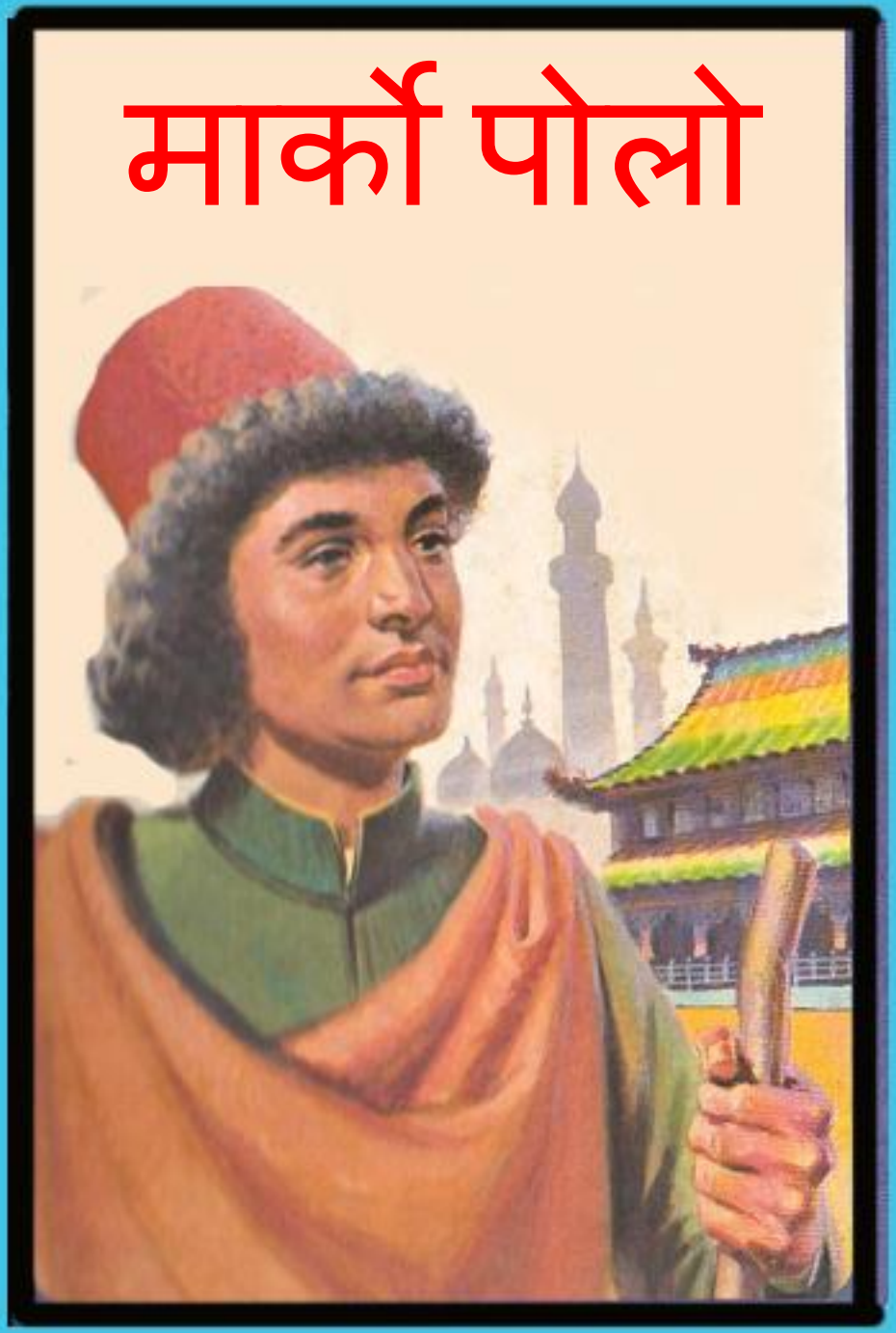

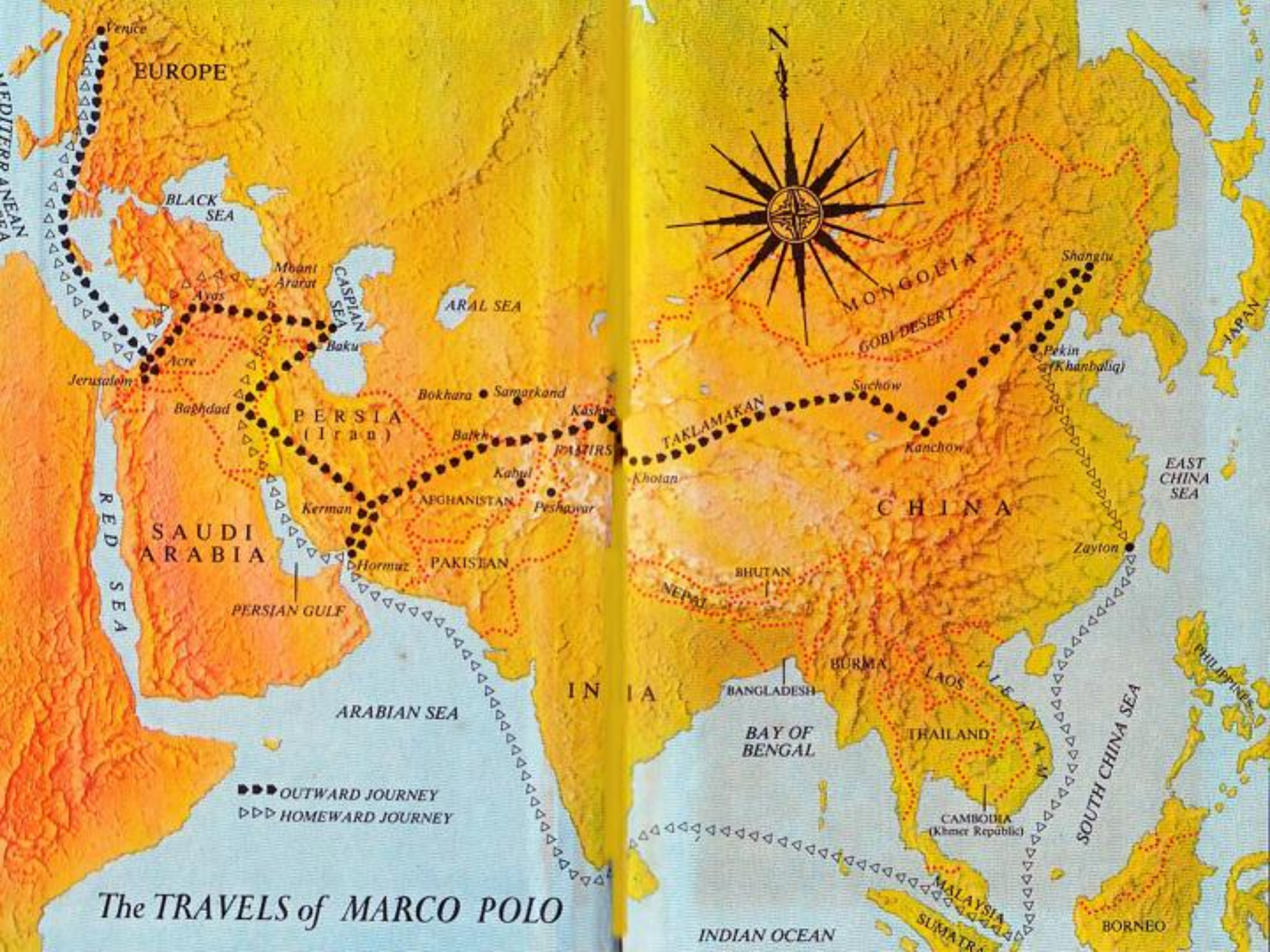

Venice
EUROPE
MEDITERRANEAN SEA
BLACK SEA
Mount Ararat
CASPIAN SEA
ARAL SEA
Ayas
Baku
Acre
Jerusalem
Baghdad
PERSIA (Iran)
Bokhara
Samarkand
Kashgar
Balkh
PAMIRS
Kabul
Peshawar
AFGHANISTAN
Kerman
Hormuz
PAKISTAN
SAUDI ARABIA
RED SEA
PERSIAN GULF
ARABIAN SEA
INDIA
N
MONGOLIA
GOBI DESERT
Shangtu
Pekin (Khanbaliq)
Suchow
TAKLAMAKAN
Kanchow
Khotan
CHINA
EAST CHINA SEA
JAPAN
Zayton
BHUTAN
NEPAL
BANGLADESH
BURMA
LAOS
VIETNAM
THAILAND
CAMBODIA (Khmer Republic)
BAY OF BENGAL
SOUTH CHINA SEA
PHILIPPINES
MALAYSIA
SUMATRA
BORNEO
INDIAN OCEAN
OUTWARD JOURNEY
HOMEWARD JOURNEY
The TRAVELS of MARCO POLO

मार्को पोलो

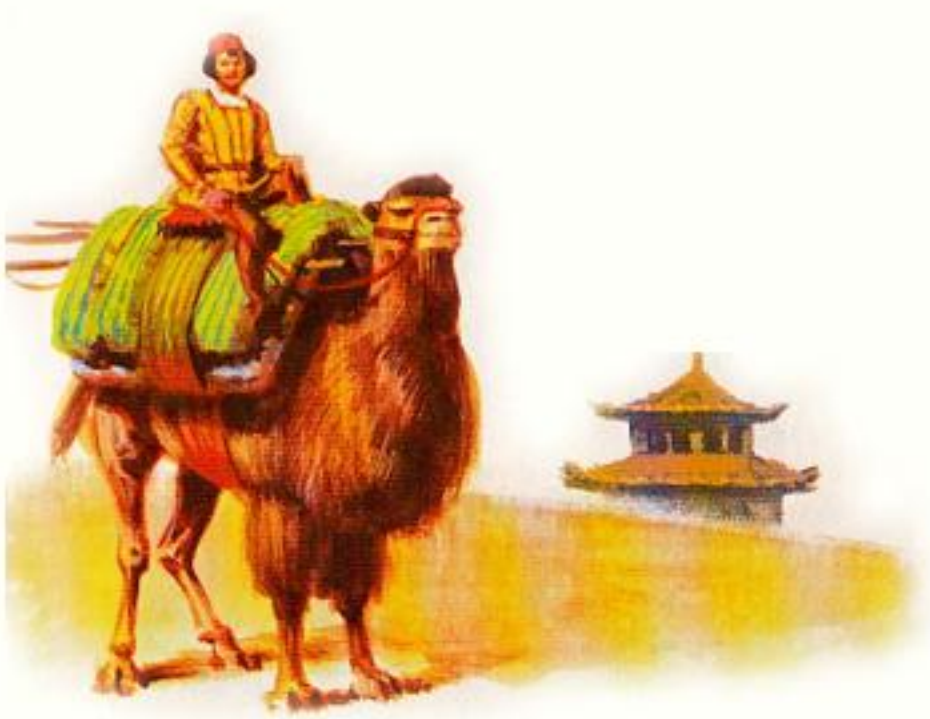

मार्को पोलो का जन्म वेनिस में साल 1254 में हुआ था. वेनिस धन, शक्ति और वैभव का शहर था और वो रहने के लिए एक अद्भुत स्थान था. वो कई छोटे द्वीपों को मिलाकर बनाया गया था. इसका मतलब वहां सड़कें नहीं थीं. इस शहर में नहरें थीं. जब लोग अपने दोस्तों से मिलने जाते थे, तो वे अक्सर नाव से जाते थे.

वेनिस महत्वपूर्ण था क्योंकि वो समुद्री मार्गों के एक बड़े जाल के केंद्र में स्थित था. वेनिस के व्यापारियों ने दुनिया में दूर-दूर के लोगों के साथ कारोबार किया था. उन्होंने पूर्व से रेशम, मसाले, कालीन और कीमती पत्थरों जैसी चीजें खरीदीं, और उन्होंने विलासिता के सामानों के इस बेड़े को, इंग्लैंड के व्यापारिक मेलों में भेजा.

इस बंदरगाह में जहाज़ों की पार्किंग के लिए "क्वेय" थीं जिनके मालिक वेनिस के लोग थे.

सात सौ साल पहले, दुनिया की यात्रा करना आज की तुलना में बहुत अधिक खतरनाक और कठिन था. उस समय बहुत से लोग पृथ्वी को सपाट समझते थे. यूरोपीय लोग पूरी दुनिया और उसके लोगों के बारे में बहुत कम ही जानते थे. वैसे वो दूर देशों के माल को खरीदते थे और उसका इस्तेमाल करते थे.

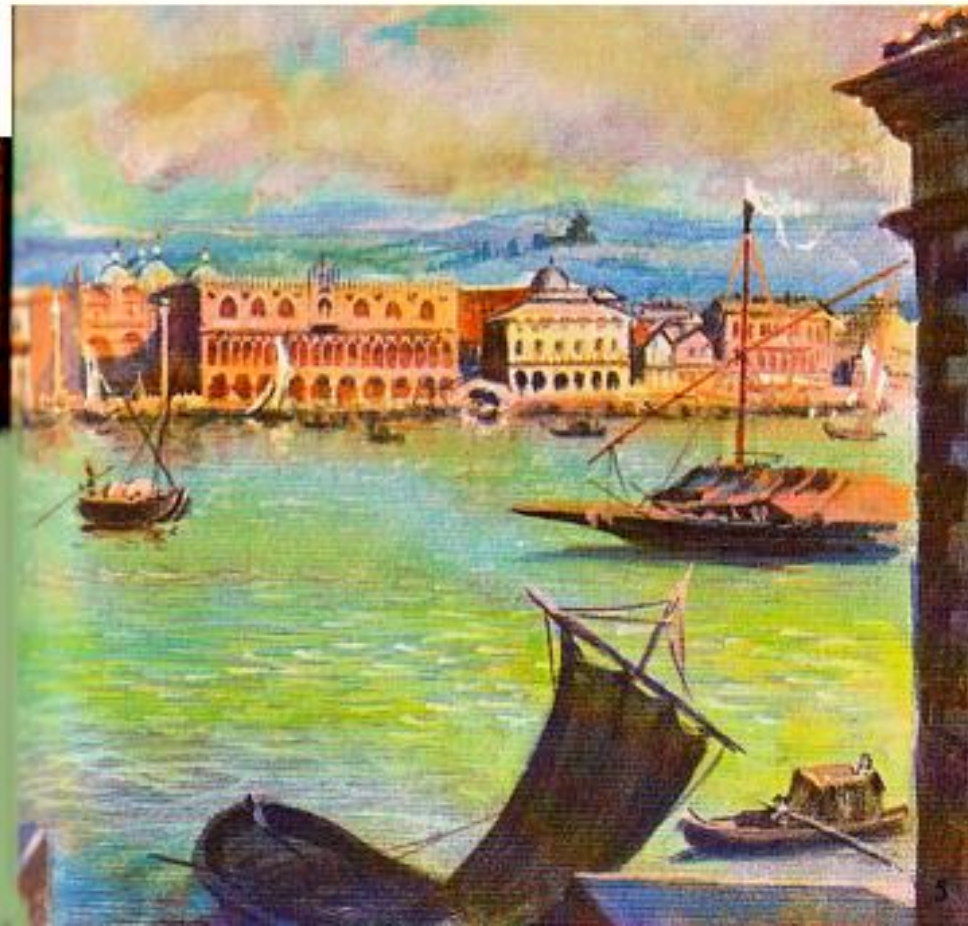

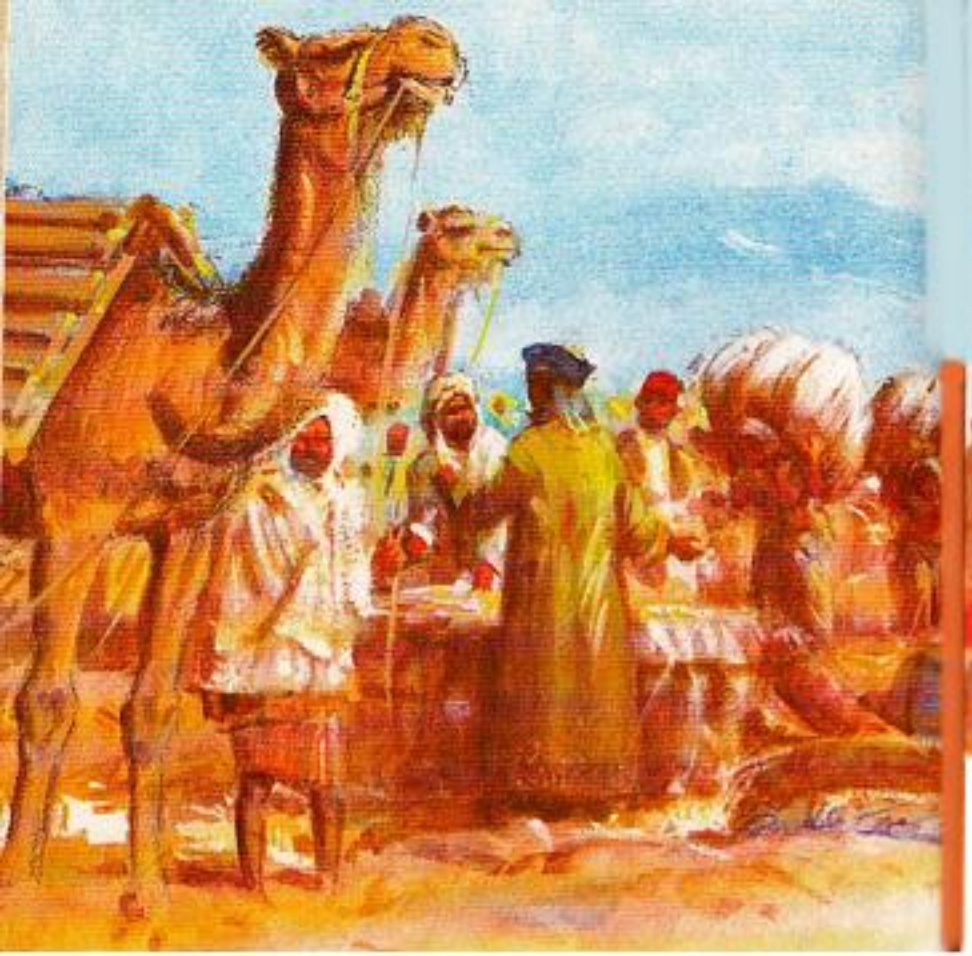

ज्ञान की कमी का मुख्य कारण वो भारी दूरियों थीं जहाँ से जानकारी पाना कठिन था. व्यापारियों को रिले में काम करना पड़ता था: एक समूह दूसरे से मिलता था और उसे माल सौंपता था. एशिया की सिल्क रोड - चीन को जिसकी राजधानी माना जाता था, सात हजार मील (11,265 किलोमीटर) लंबी थी. इसलिए यात्रा के दौरान, माल कई लोगों के हाथों बदलता था. जो नाविक सामान को यात्रा के अंतिम चरण में ढोते थे, उन्हें उन देशों के बारे में कुछ भी नहीं मालूम होता था जहाँ से मूल रूप से वो रेशम और गहने आए थे.

चूंकि रेशम और मसालों जैसे माल में बहुत अधिक मुनाफा था, इसलिए व्यापारी उनके लिए लंबी और कठिन यात्रा करने को तैयार थे. मार्को पोलो ऐसा ही एक साहसिक व्यापारी था. वो निकोलो पोलो का बेटा था. जब मार्को पंद्रह वर्ष का था तो उसके पिता और चाचा, माफ़ियो, कई वर्षों की एक लम्बी व्यापारिक यात्रा से वापिस लौटे थे.

वे चीन की राजधानी, पेकिन में गए और वहां मंगोल सम्राट, कुबला खान जो "महान खान" भी कहलाता था से जाकर मिले. उन्होंने कुबला खान को पश्चिमी दुनिया में रहने के तौर-तरीकों के बारे में बताया, जिसे मंगोल सम्राट ने बड़ी दिलचस्पी के साथ सुना.

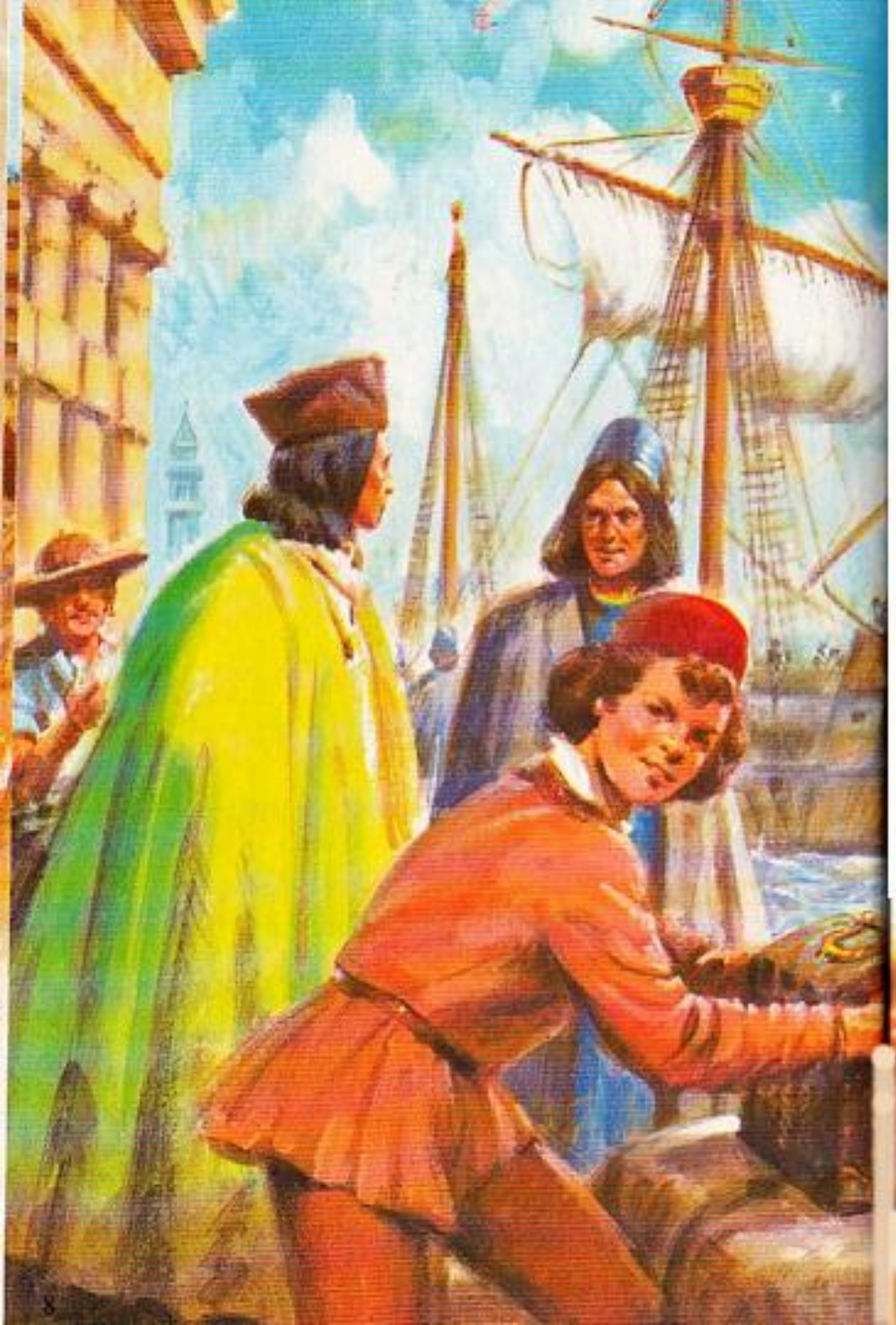

ईसाई धर्म के विचारों में ग्रेट खान ने बड़ी दिलचस्पी दिखाई. सम्राट ने वेनिस के दोनों व्यापारियों के साथ इटली में पोप के लिए एक पत्र भेजा. इसमें, सम्राट ने पोप से कुछ ईसाई भिक्षुओं को भेजने को कहा. उसने दोनों पोलो भाइयों को भिक्षुओं के साथ अपने दरबार में लौटने का न्योता भी दिया.

उसने उन्हें यरूशलेम में पवित्र सेपुलर के चर्च के प्रसिद्ध दीपक में से कुछ तेल लाने को कहा. ऐसा माना जाता था कि वो दीपक बिना बुझे एक हजार साल से जल रहा था.

जब निकोलो और माफ़ियो पोलो वेनिस वापस पहुंचे तो उन्होंने पाया कि वहां पुराने पोप की मृत्यु हो गई थी. अब नए पोप के चुने जाने तक उन्हें कुबला खान के अनुरोध का इंतजार करना था.

दो साल बीतने के बाद भी कोई नया पोप नियुक्त नहीं हुआ. प्रतीक्षा से थककर, दोनों पोलो भाईयों ने एक बार फिर से पेकिन की लंबी और खतरनाक यात्रा पर जाने का मन बनाया. क्योंकि अब मार्को सत्रह साल का हो गया था, इसलिए उन्होंने उसे भी अपने साथ ले चलने का फैसला किया.

जब वे आयस पहुंचे, तो ऐसा लगा कि उनकी किस्मत अचानक चमकी. उन्हें एक संदेश मिला जिसमें नए पोप - ग्रेगरी एक्स ने उन्हें बुलाया और उनकी मदद करने की पेशकश की. मिलने पर पोप ग्रेगरी ने कुबला खान को व्यक्तिगत संदेश, और कई महंगे उपहार भी भेजे. उन्होंने ग्रेट खान के दरबार में जाने के लिए दो ईसाई पादरियों को भी भेजा.

पोलो भाई, पोप का पूर्ण आशीर्वाद लेकर ईसाई भिक्षुओं के साथ खान से मिलने के लिए चले.

पर जब उन पांच लोगों की पार्टी आयस पहुंची, तब परेशानी शुरू हुई. आयस से सड़क पूर्व की ओर आर्मेनिया से होकर जाती थी. वो एक कठिन सड़क थी, जो कभी-कभी रेगिस्तान में बहुत सकरी पगडंडी बन जाती थी, और उसपर चलना बहुत कठिन था. वहां तेज़ नदियों का एक जाल था जो अक्सर संकीर्ण चट्टानों के किनारों से होकर बहती थीं. नीचे गहरे चट्टानी घाटियों में, खतरनाक तेज़ धार वाली नदियां थीं.

दोनों पादरी इस प्रकार की कठिन यात्रा के अभ्यस्त नहीं थे. वो आगे की यात्रा करने से घबरा रहे थे. फिर उन्हें एक हथियारबंद पार्टी मिली जिसने उन्हें बताया कि आर्मेनिया में लड़ाई चल रही थी. यह सब पादरियों की बर्दाश्त से बहुत ज्यादा था. फिर वे पोप के उपहारों को छोड़कर, वापस घर लौट गए.

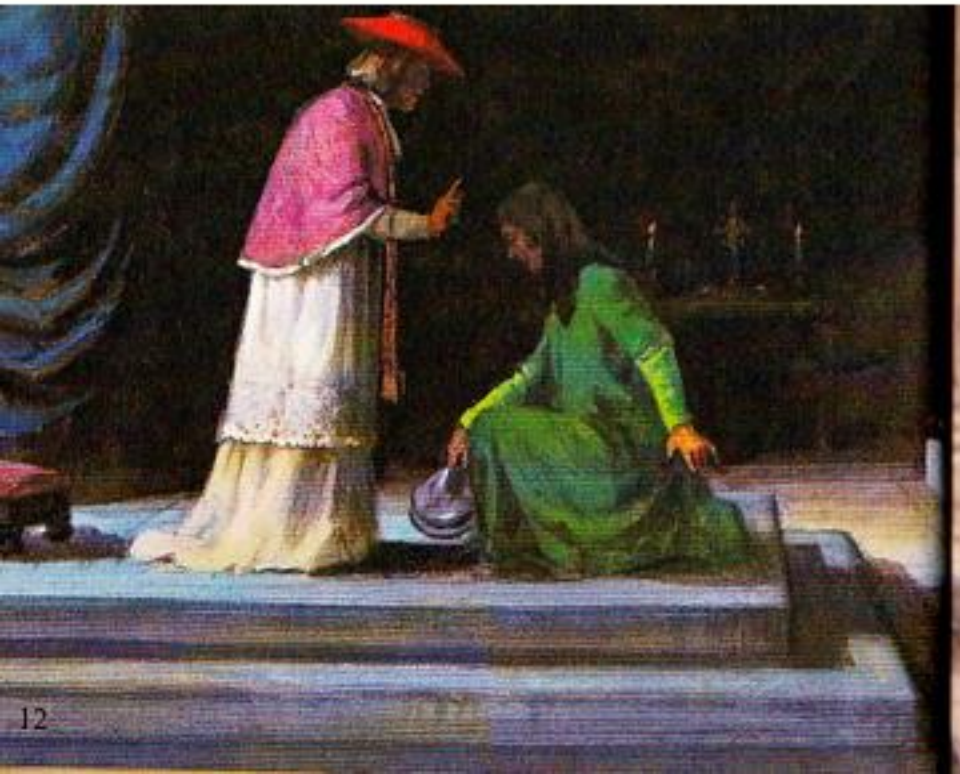

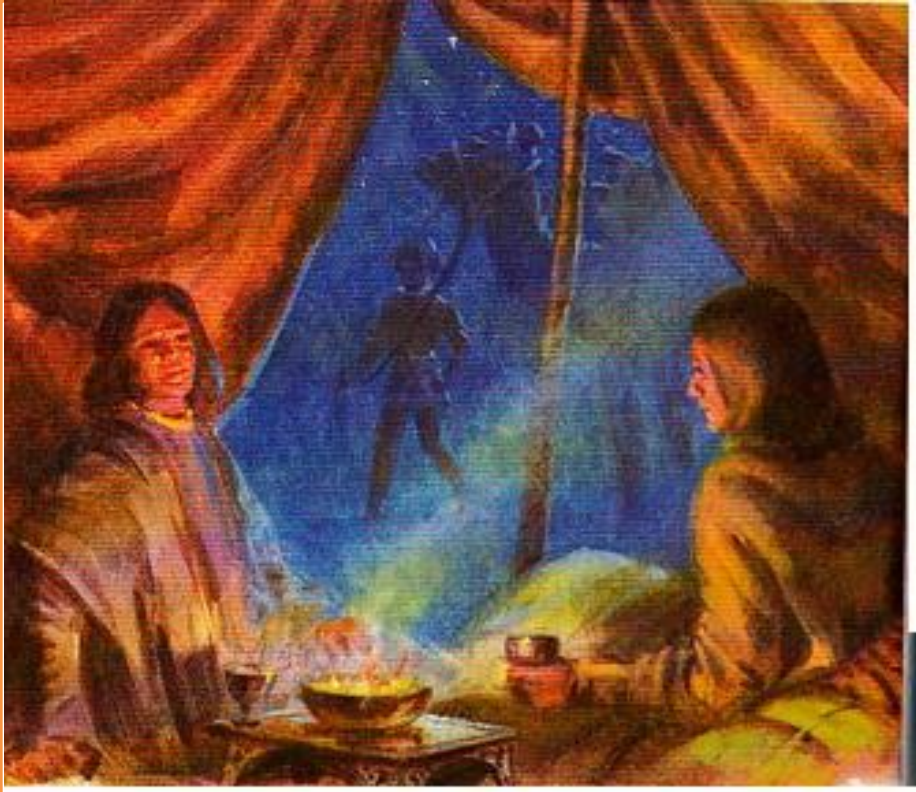

उसके बाद उन तीनों विनीशियन लोगों ने अकेले अपनी यात्रा ज़ारी रखी. उन्होंने कभी पैदल, कभी खच्चरों और ऊंटों पर यात्रा की, और रात में तारों के नीचे सोए. मार्को ने वेनिस के अपने आरामदायक घर से, एक लंबा और कठिन रास्ता तय किया था.

लड़ाई से बचने के लिए उन्होंने उत्तरी दिशा चुनी. मार्को अब एक ऐसे देश में था जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था. इसलिए उसने रास्ते में हर चीज़ को बड़े ध्यान से देखा.

एक अजीब जगह जो उसे याद रही वहां एक तेल का फव्वारा पृथ्वी से बाहर निकल रहा था. वहां आस-पास रहने वाले लोगों ने उसे बताया कि वो फव्वारा दिन-रात हमेशा चलता रहता था.

मार्को के नोट्स हमें बताते हैं, 'वो तेल खाने के लिए अच्छा नहीं था, लेकिन वो जलाने के लिए बहुत अच्छा था, वो खुजली से पीड़ित लोगों और ऊंटों के उपचार के लिए भी अच्छा था. इस तेल को लेने के लिए लोग लंबी दूरी तय करके आते थे.'

आधुनिक दुनिया में इस जगह को "बाकू" तेल क्षेत्र के रूप में जाना जाता है. आज यहाँ से हवाई जहाज और कारों के लिए पेट्रोल की बड़ी मात्रा में तेल की आपूर्ति होती है.

मार्को ने कई कहानियाँ और स्थानीय किंवदंतियाँ भी सुनीं, जिन्हें उसने बाद में लिखा. इनमें से एक "नोआह के जहाज़" के बारे में थी, जिसे अभी भी ऊंचे पर्वत, माउंट अरार्ट के शिखर पर देखा जा सकता था, जहां बाढ़ के बाद वो उतरा था.

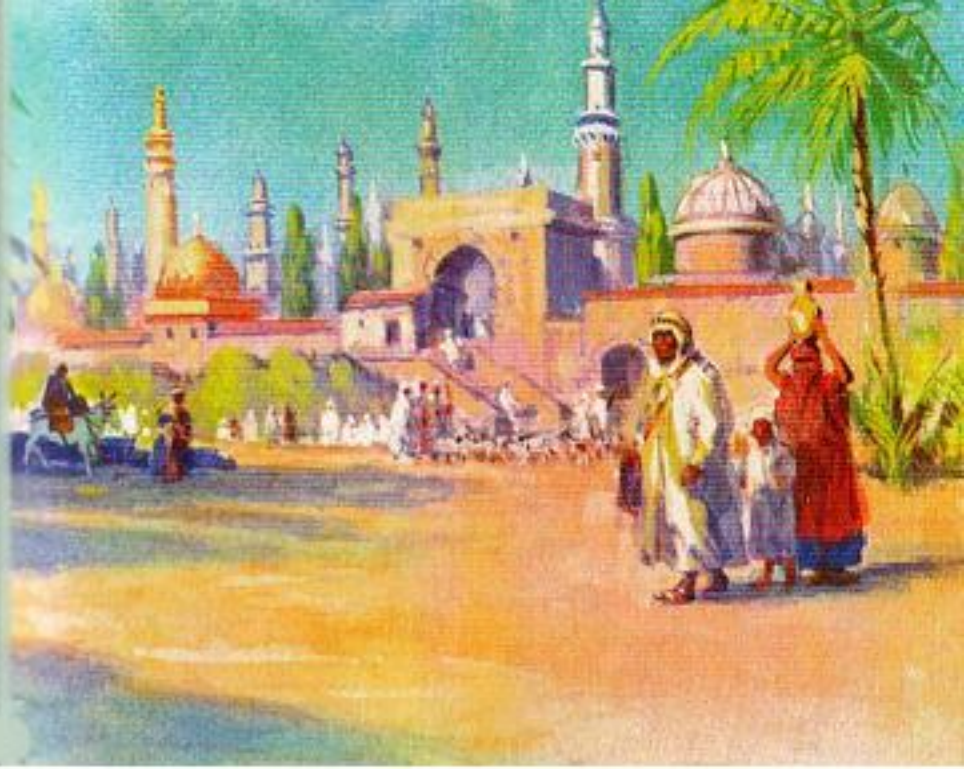

तीनों यात्री अब फारस की खाड़ी के लिए दक्षिण की ओर मुड़े, जहां चीन के रास्ते उन्हें भारत जाने के लिए एक जहाज मिलने की उम्मीद थी. समुद्र से यात्रा करने पर वो गोबी रेगिस्तान के खतरे से बच सकते थे. अब वे एक दिन में केवल बीस मील (32 किलोमीटर) की यात्रा कर पा रहे थे, क्योंकि सड़क बहुत खराब थी. मौसम बहुत गर्म था, इसलिए उन्हें दिन में तीन-चार घंटे आराम करना पड़ता था.

अपनी लंबी यात्रा के इस हिस्से के दौरान, उन्होंने प्रसिद्ध शहर बगदाद का दौरा किया, जिसे मार्को ने 'दुनिया के इस हिस्से में पाए जाने वाले सबसे बड़े शहर और सबसे व्यापक शहर' के रूप में वर्णित किया

. वो एक शानदार शहर था, जिसमें चमकीले टाइलों वाली मस्जिदें और मीनारें थीं, जो ताड़ के पेड़ों और खूबसूरत बगीचों से घिरी हुई थीं.

बगदाद सोने और अमीरों के लिए कशीदे और मखमल और कपड़े के लिए जाना जाता था. वेनिस के व्यापारियों की बगदाद में बहुत रूचि थी. यह हारून-अल-रासचिद और अरब नाइट्स एंटरटेनमेंट का शहर था, जहाँ से अद्भुत कहानियाँ - "अली बाबा और चालीस चोर" और "अलादीन और उसका अद्भुत चिराग" आती हैं.

बगदाद शिक्षा के केंद्र के रूप में भी प्रसिद्ध था. खगोल विज्ञान और विज्ञान विषयों का वहां अध्ययन किया जाता था.

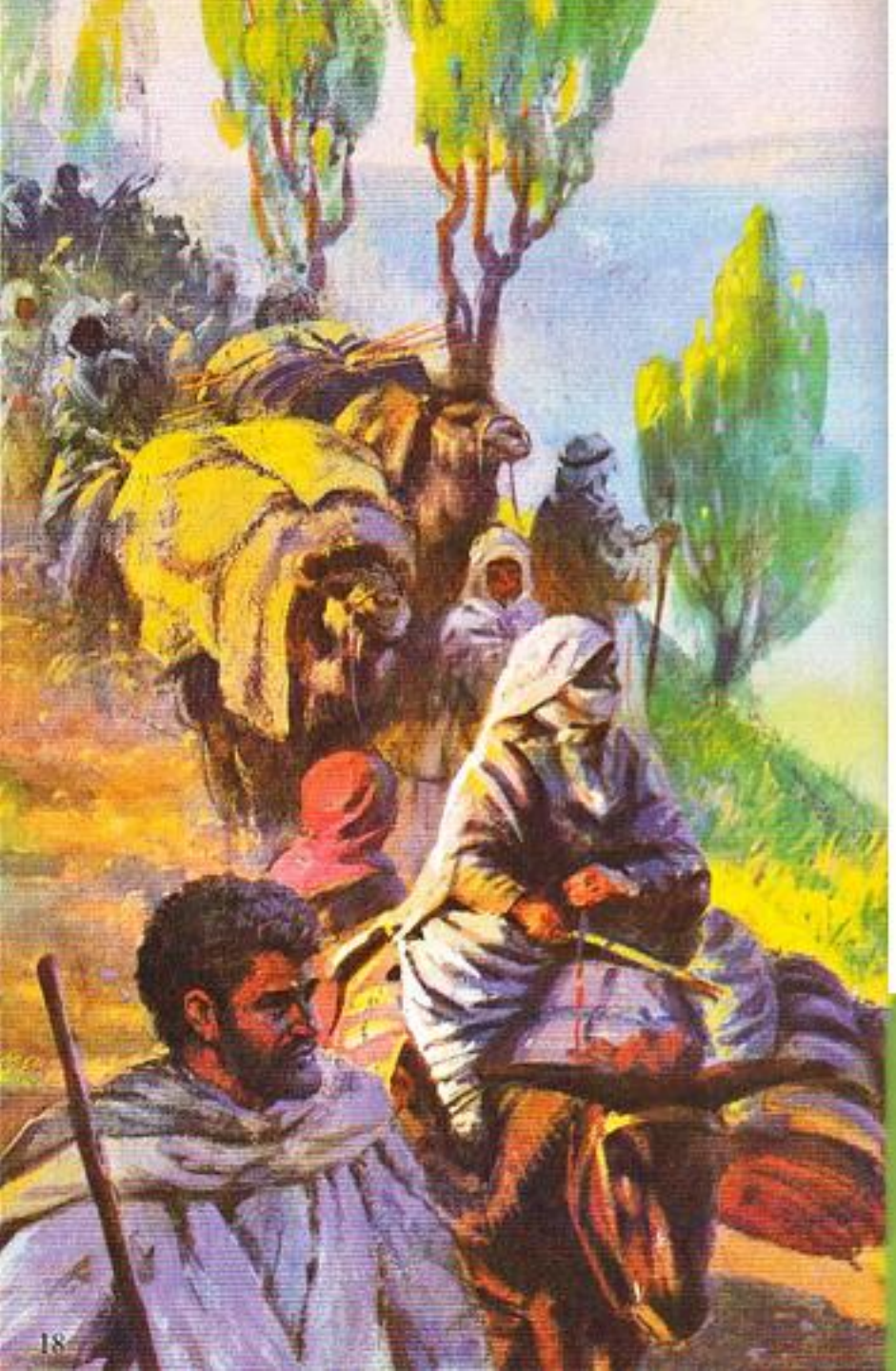

जिस शहर की ओर मार्को, उसके पिता और चाचा जा रहे थे वो करमन था. यात्रा अब बहुत सुखद हो गई थी. अब वे अपने दासों, पहरेदारों के साथ कई अन्य व्यापारियों के साथ इकट्ठे यात्रा कर रहे थे. दुनिया के इस हिस्से में, अक्सर डाकू मिलते थे, इसलिए वहां अकेले यात्रा करना सुरक्षित नहीं था.

सड़क हमेशा रेगिस्तान या खतरनाक दर्रों से होकर नहीं गुज़रती थी. यहाँ पर अमीर लोगों के चरागाह थे. यहां रेगिस्तान में भी ताड़ के पेड़ों की छाया थी. मार्को ने वहां शिकार और बाज़ों के बारे में भी लिखा.

उसने बेथलहम में यीशू के तीन अनुयायियों की स्थानीय किंवदंती के बारे में भी लिखा. वे तीनों शिशु यीशू के पास गए थे. उन तीन बुद्धिमान लोगों को सेवह नामक शहर में बहुत सुंदर कब्रों में दफनाया गया था, जिन्हें मार्को ने अपनी यात्रा के दौरान देखा. किंवदंती के अनुसार समझदार पुरुषों ने शिशु यीशू को उपहार के रूप में एक छोटा कास्केट (डिब्बा) दिया था. उसे खोलने पर उसमें एक छोटा पत्थर मिला, जिसे उन्होंने निराशा होकर एक कुएं में फेंक दिया. उससे वो कुँआ चमत्कारी बन गया और उसमें लौ जलने लगी जो तब से जल रही है.

करमन में सड़क पर रास्ता दो भागों में बंटता था. पूर्व में जाने वाले लोग अफगानिस्तान जा सकते थे और उत्तर की ओर जाने वाले यात्री फ़ारस की खाड़ी होकर अंत में एक बंदरगाह होर्मुज पहुँच सकते थे.
मार्को ने दक्षिणी सड़क पर यात्रा ज़ारी रखी जो जंगलों और पहाड़ी इलाकों से होकर गुज़री. एक ऊंचे पहाड़ के दर्रे पर, वो तीव्र ठंड से बहुत पीड़ित हुआ, लेकिन जैसे ही

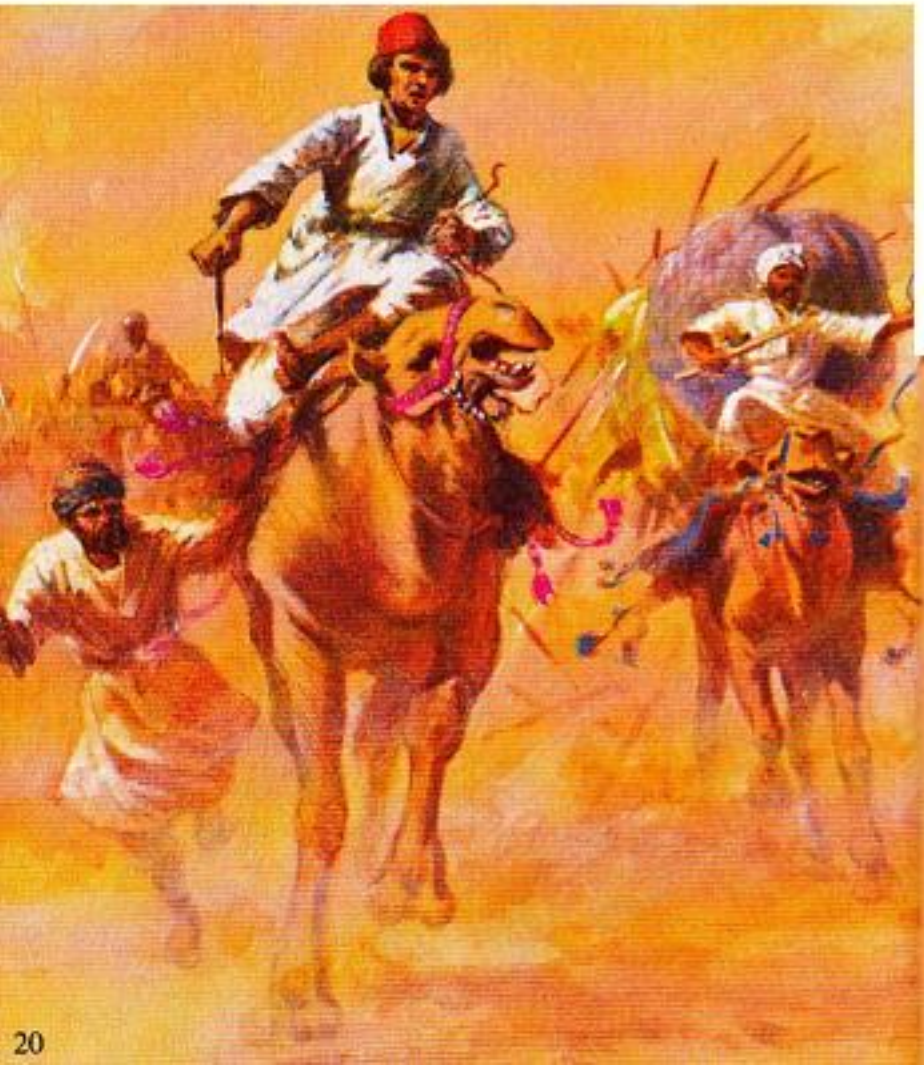

वो मैदान पर उतरा वहां प्रचंड गर्मी पड़ने लगी.
इस सड़क पर व्यापारियों की पार्टी पर करुणा नामक डाकुओं ने हमला किया. इन डाकुओं ने इस क्षेत्र को आतंकित किया था. हमला करते समय यह डाकू अपने शिकार को भ्रमित करने और डराने के लिए 'जादू का कोहरा' बनाते थे . शायद यह 'शुष्क कोहरा' रहा हो जो गर्म हवाओं से उड़ने वाली महीन धूल के कणों से बनता होगा, लेकिन मार्को पोलो के समय में उसके वैज्ञानिक कारण के बारे में कोई नहीं जानता था.
व्यापारियों के कारवां के रक्षकों और डाकुओं के बीच जमकर लड़ाई हुई. हालांकि अधिक रक्षक न होने के कारण व्यापारियों को ज़्यादा नुक्सान हुआ.
फिर पोलो व्यापारियों ने कमासल नामक एक नजदीकी शहर में सुरक्षा ली, और फिर उनके हमलावर भी भाग गए.

कुछ दिनों बाद वे किसी हादसे के बिना होर्मुज पहुंचे. अपने पिता और चाचा के साथ मार्को एक जहाज की तलाश में "क्वेय" पर गया.
वहां उन्हें भारत के दक्षिण में लंबी यात्रा के लिए कोई उपयुक्त जहाज़ नहीं मिला. पोलो को यकीन नहीं हुआ कि नाविक होर्मुज बंदरगाह के ख़राब जहाजों पर अपने जीवन को दांव पर लगाएंगे. मार्को ने कहा कि वे जहाज़ 'सबसे खराब किस्म के थे, और नेविगेशन के लिए खतरनाक थे'. जहाज़ों के तख्तों को कीलों की बजाए लकड़ी के खूँटों और नारियल की रस्सियों के साथ बाँधा गया था. आज भी, फ़ारस की खाड़ी में, आप इस तरह से बनी नावों को देख सकते हैं.

इन जहाजों में केवल एक पाल थी और कोई लंगर नहीं था. खराब मौसम में वे अक्सर किनारे से टकराकर टूट जाते थे.
निकोलो ने फैसला किया कि इस तरह के जहाज में जोखिम उठाने के बजाय, वो करमान लौटेगा और वहां से चीन सड़क के रास्ते जायेगा.
मार्को, होर्मुज छोड़ने के बाद खुश था. उसने होर्मुज को असहनीय गर्म और निराशाजनक पाया. जब वहां किसी की मृत्यु होती, तो वहां महिलाओं को चार साल तक शोक मनाना पड़ता था. उन्हें दिन में कम-से-कम एक बार विलाप ज़रूर करना पड़ता था.

इन मिश्रित भावनाओं के साथ उन्होंने दो सौ मील (322 किलोमीटर) करमान तक की दूरी तय की. उन्हें पहाड़ की ठन्डे दर्रों और मैदानी इलाकों की गर्मी याद आई. सबसे ज़्यादा उन्हें डाकुओं की दहशत याद आई.

उन्होंने सावधानीपूर्वक यात्रा की, और सुरक्षित रूप से करमान पहुंचने में कामयाब रहे. यहां से वे फिर से पूर्व की ओर निकल पड़े.

जिस देश को अब उन्हें पार करना था वह नंगा रेगिस्तान था. वहां रेत के अलावा और कुछ भी नहीं था - न पेड़ और न ही पानी, और गर्मी अत्यंत तीव्र थी. यहां तक कि वहां जंगली जानवर भी नदारद थे.

उन्होंने इस रेगिस्तान को पार करने में कई दिन बिताए.

फिर वे बल्ख शहर पहुंचे.

उन्हें बताया गया कि बल्ख शहर में "अलेक्जेंडर द ग्रेट" ने फारस के राजा की बेटी, राजकुमारी रोक्साना से शादी की थी. मार्को ने उल्लेख किया कि 'बल्ख के महल' तब तक खंडहर में बदल गए थे.'

वहां आकर फिर से सड़क बंट गई. एक रास्ता उत्तर में समरकंद, दूसरा दक्षिण में काबुल और पेशावर और तीसरा रास्ता उत्तर-पश्चिम में बोखारा जाता था.

ऊंट-ड्राइवरों के साथ बात करने के बाद, निकोलो ने काशगर जाने के लिए पूर्व का रास्ता चुना.

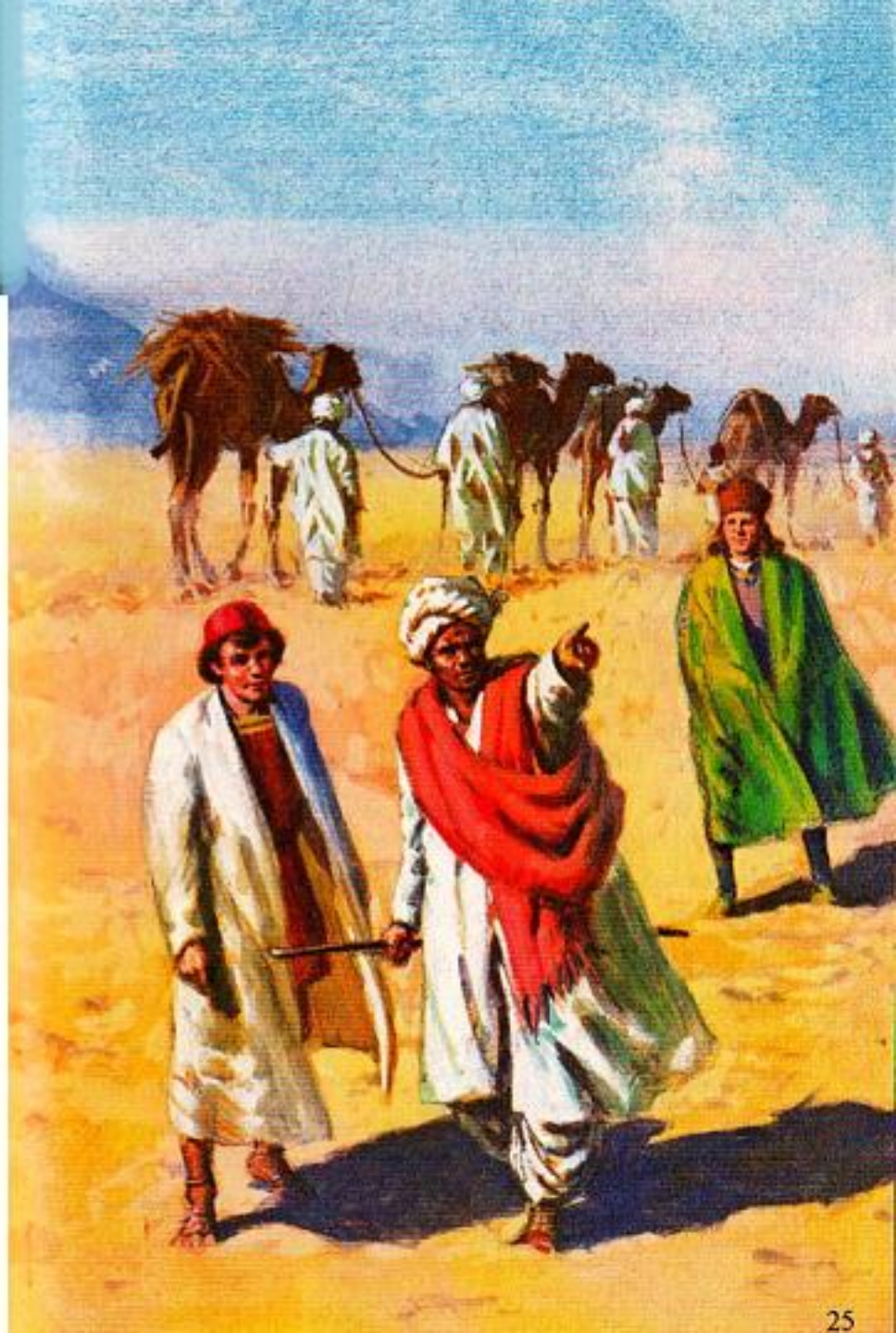

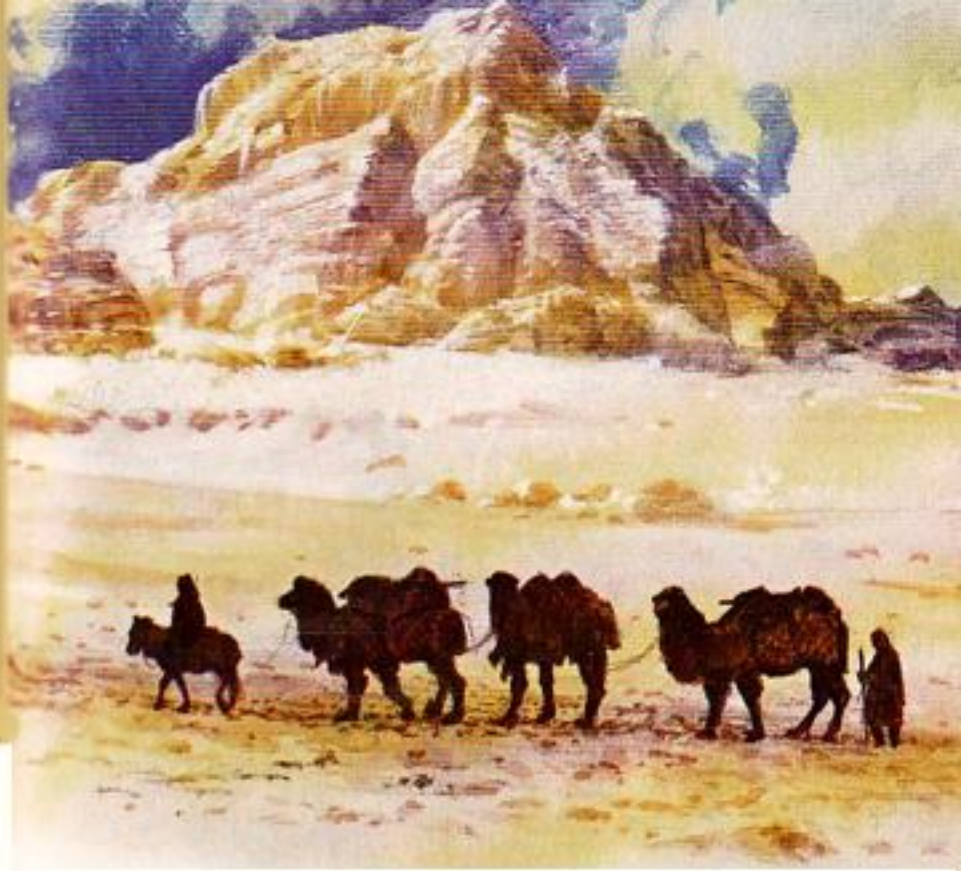

यद्यपि यह रास्ता छोटा था, लेकिन उसमें उन्हें कुछ ऊंचे और बहुत पहाड़ी इलाकों को पार करना था, जिसे 'दुनिया की छत' के रूप में जाना जाता था. यह समुद्र तल से 15,600 फीट (4,755 मीटर) की ऊंचाई पर पामीर का मैदान था, जहाँ से होकर ऑक्सस नदी, अरल सागर तक बहती थी.

मार्को ने उल्लेख किया कि इस उच्च टेबललैंड पर चढ़ना कितना कठिन था. किसी भी अन्य देश की तुलना में यह उनकी अभी तक की सबसे कठिन यात्रा थी.

कई चीजें थीं जिसने उन्हें आश्चर्यचकित किया. वहाँ कोई पक्षी नहीं थे और न ही वहाँ लोग थे. यह प्रदेश बहुत ठंडा था. जब वे अपना खाना बनाने लगे तो उन्होंने पाया कि वहां आग में भी बहुत कम गर्मी थी.

मार्को को लगा कि तीव्र ठंड उसका कारण थी, लेकिन आज हम जानते हैं कि उच्च ऊंचाई पर हवा में कम ऑक्सीजन होती है. इसलिए वहां पानी कम तापमान पर उबलता है और इसलिए भोजन पकाने में अधिक समय लगता है.

मार्को ने एक जंगली भेड़ का वर्णन किया जो अपने बड़े घुमावदार सींगों के साथ पामीर के मैदानों में रहती थी. उन्होंने उसका नाम "ओविस पोली" रखा हालांकि वो उसका वर्णन करने वाले पहले व्यक्ति नहीं थे.

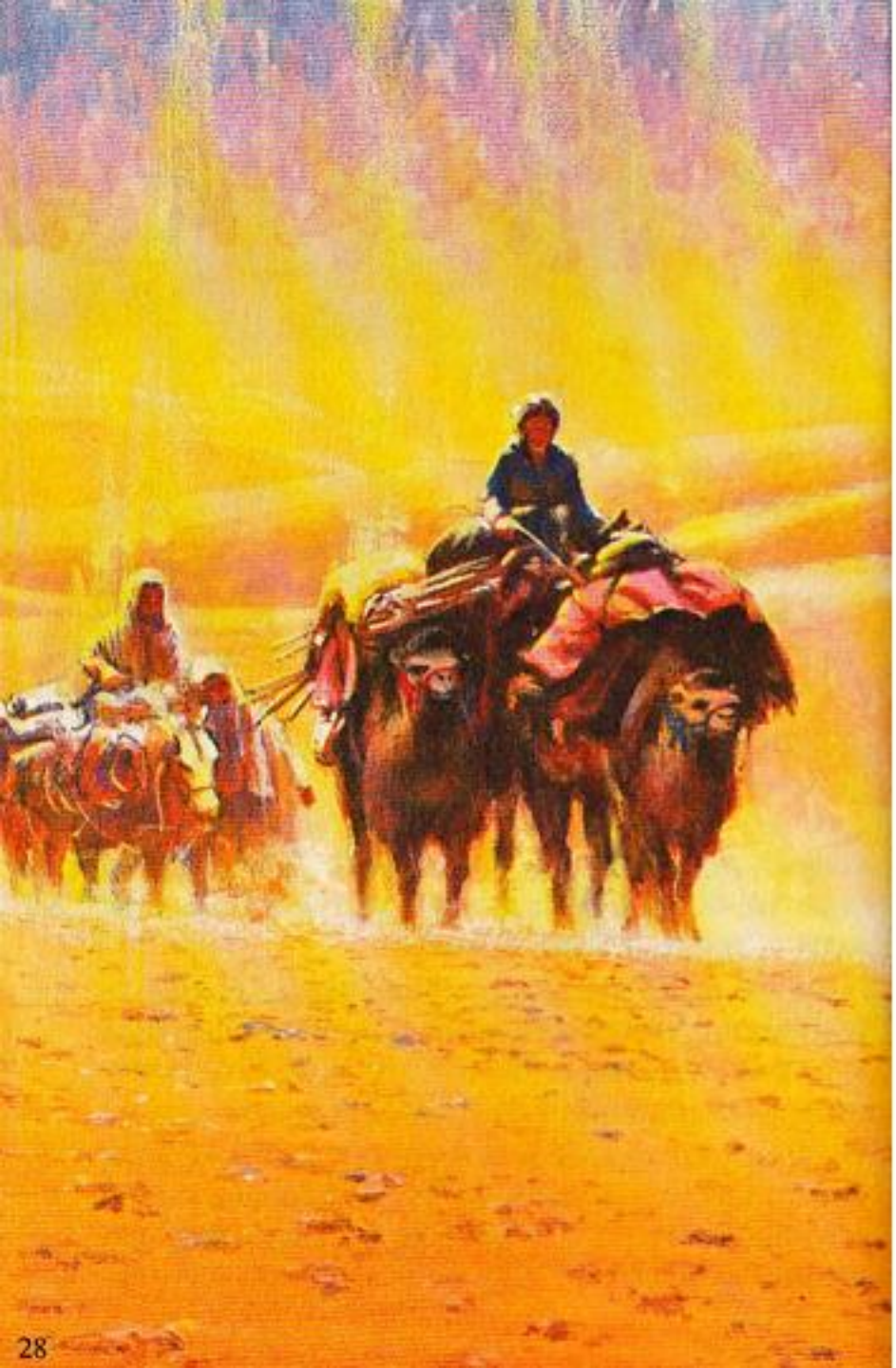

मार्को, माफ़ियो और निकोलो ने पामीर के मैदान को छोड़ दिया और फिर उन्होंने दुनिया के सबसे खूबसूरत देशों में से एक, कश्मीर के उत्तरी छोर को पार किया. वे काशगर के पास से गुजरे, जहाँ मार्को ने सुंदर बगीचे और अंगूर के बागानों देखे. यह इलाका जेड-पत्थर की खदानों के लिए प्रसिद्ध था. (जेड एक बहुत ही कठोर, कीमती पत्थर होता है, जो आमतौर पर पीला-हरा होता है, लेकिन कभी-कभी क्रीम या सफेद भी होता है. इसका इस्तेमाल अक्सर गहने बनाने लिए किया जाता है.)

लेकिन फिर दृश्य बदल गया. अब उन्हें एक बेहद कठिन रेगिस्तान पार करना पड़ा. यद्यपि इस रेगिस्तान को कभी-कभी "गोबी रेगिस्तान" कहा जाता है, पर उसका सम्बन्ध उत्तर-पूर्व में मंगोलिया के बड़े रेगिस्तान से था. काशगर छोड़ने के बाद जो भयावह स्थान आया, उसका नाम टकलामकान था. इसे पार करने में उन्हें एक महीने से अधिक समय लगा. वहां एक दिन की यात्रा के बाद ही कोई पानी का सोता मिलता था.

यह एक गंभीर और निषिद्ध जगह थी. वहां कहीं-कहीं नखलिस्तान (ओएसिस) के अलावा और कोई जीवन नहीं था. मार्को ने लिखा: “यह सच है कि यह रेगिस्तान बुरी आत्माओं का निवास है, जो यात्रियों का विनाश करता है. सही रास्ता खोजने में उन्हें बहुत समय लग जाता है और तब वे बुरी तरह से भूख से मर जाते हैं.”

मार्को ने रेगिस्तान के अजीब मृगतृष्णा (मिराज) भी देखे. एक मृगतृष्णा में, झील और पेड़ और यहां तक कि इमारतें रेत के बीच में दिखाई देती हैं. ऐसा इसलिए दिखता है क्योंकि वास्तविक इमारतों, पेड़ों और अन्य वस्तुओं (जो क्षितिज के आगे और नीचे दूर होती हैं) के प्रकाश को गर्म हवा की एक परत द्वारा प्रतिबिंबित किया जाता है.

बाद में वे रेगिस्तान को पीछे छोड़कर टोंगुट प्रांत के सुको में पहुंचे. हरे-भरे खेतों और उपजाऊ घाटियों को देखकर और एक बार फिर लोगों के बीच आकर वे प्रसन्न हुए. वे कुछ समय तक इस क्षेत्र में रहे. मार्को ने अपने नोट्स में अभ्रक (एस्बेस्टस) और इससे अग्निरोधक कपड़ा कैसे बनाया जाता था उसका उल्लेख किया. इस क्षेत्र में अभ्रक का खनन किया जाता था.

इसके बाद पोलो, कांचो की ओर चले गए, जहां उन्होंने एक और लंबा प्रवास किया. यहां मार्को ने पहली बार चीन की महान दीवार को देखा होगा.

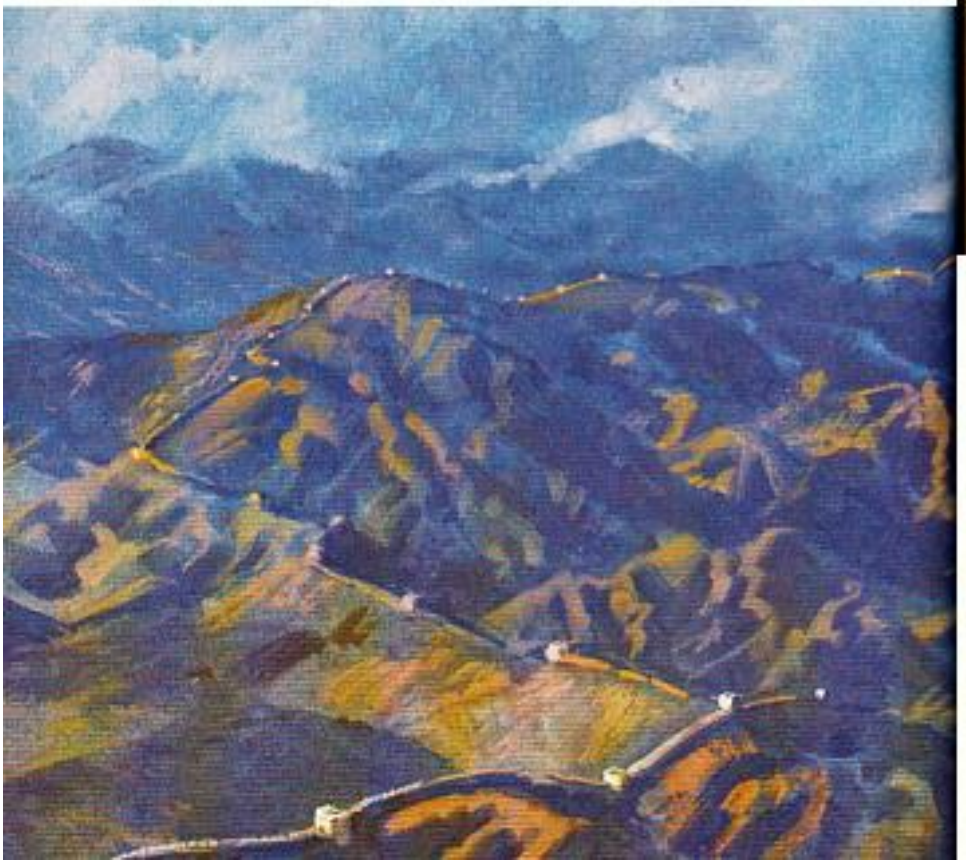

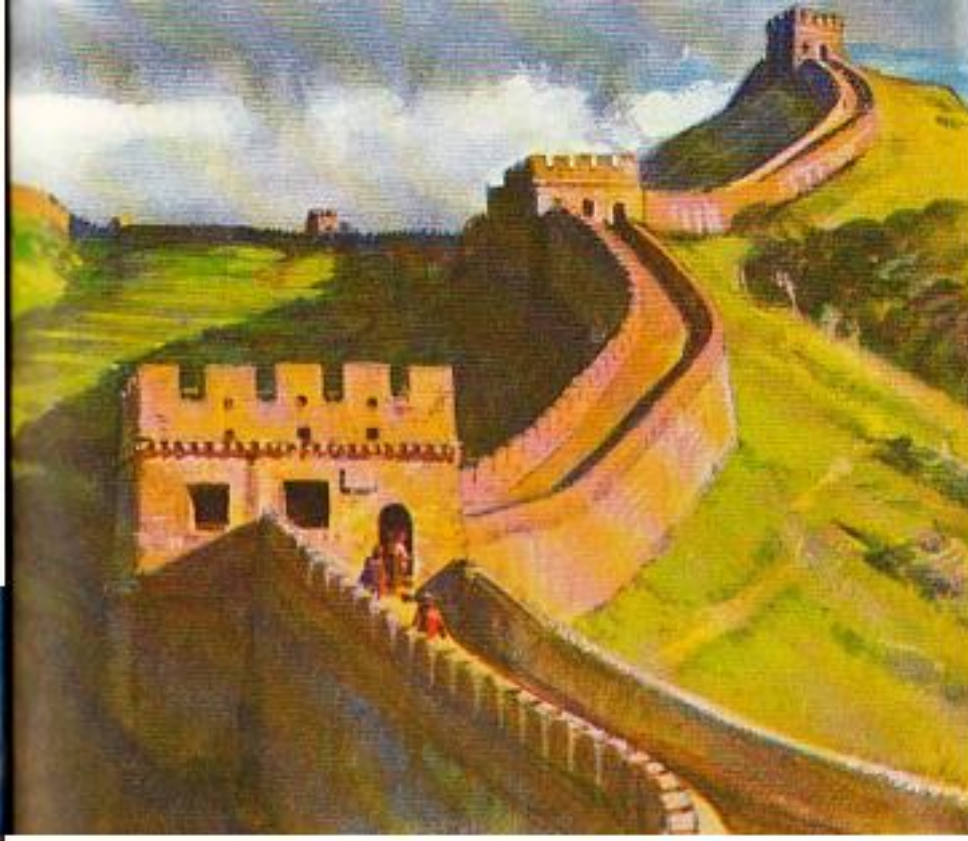

यह दीवार दुनिया के अजूबों में से एक है. इसे दो हजार साल से भी पहले बनाया गया था और इसका उद्देश्य उत्तर के बर्बर लोगों से चीन को सुरक्षित रखना था.

आज भी यह 1,400 मील (2,250 किलोमीटर) लंबी दीवार, घाटियों और पहाड़ों के बीच खड़ी है. दीवार मूल रूप से बीस फीट (6 मीटर) ऊंची और इतनी चौड़ी है कि उसके ऊपर दो गाड़ियाँ साथ-साथ चल सकती हैं. थोड़े-थोड़े अंतराल पर दीवार में मजबूत मीनारें थीं जहाँ सैनिक खड़े होकर रक्षा करते थे.

यह कुछ अजीब बात है कि मार्को पोलो, जिन्होंने अन्य इतनी सारी चीजों का उल्लेख किया, उन्होंने इस महान दीवार के बारे में कुछ नहीं लिखा.

अब यात्री उत्तर-पूर्व की ओर मुड़े, क्योंकि उन्हें पता चला कि सम्राट खान अपनी उत्तरी राजधानी शांगटू में था. जब वे शांगटू से चालीस दिन दूर थे, तब पोलो की मुलाकात कुबला खान के दूतों से हुई.
उन दिनों बेशक कोई टेलीफोन नहीं था, लेकिन चीनियों के पास संदेश भेजने की एक उम्दा प्रणाली थी, जो बहुत अच्छी, योजनाबद्ध और बहुत तेज थी.

राजधानी से सभी प्रांतों के लिए चौड़ी पोस्ट-रोड थीं जहां हर बीस मील (32 किलोमीटर) की दूरी पर पोस्ट आफिस थे. वहां आदमी और घोड़े हमेशा ड्यूटी पर तैनात रहते थे. जब किसी महत्वपूर्ण पत्र को एक बड़ी दूरी तय करनी होती थी; तो उसे किसी रिले-रेस की तरह एक पोस्ट हाउस से दूसरे तक ले जाया जाता था.

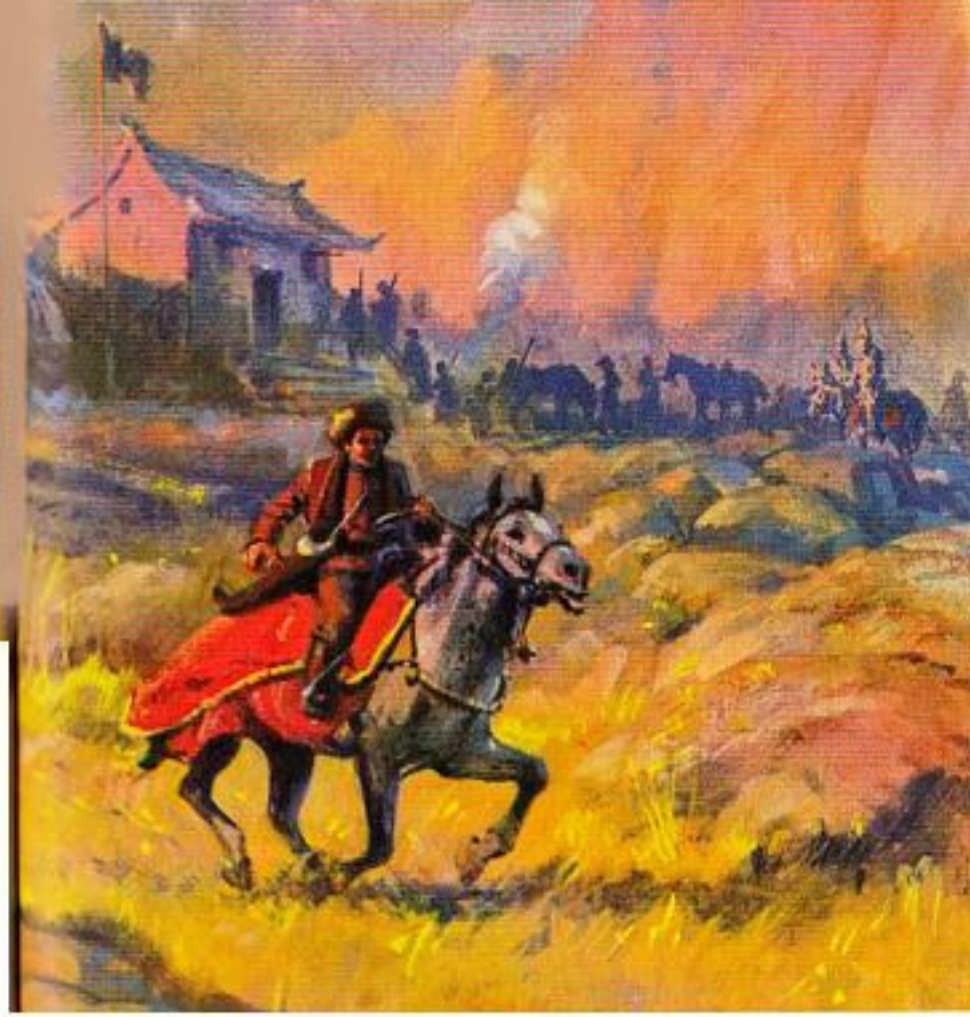

घोड़ों को तैयार रखा जाता था, जैसे ही कोई सवार आता, एक नया सवार डाक को लेकर आगे जाता था.

इस तरह किसी संदेश को एक दिन में दो सौ मील (322 किलोमीटर) से अधिक दूरी तक ले जाया जा सकता था. डाकिए न केवल संदेश लाते, वे कभी-कभी दूर के प्रांतों से राजधानी में, महान खान के खाने के लिए दुर्लभ फल भी लाते थे.

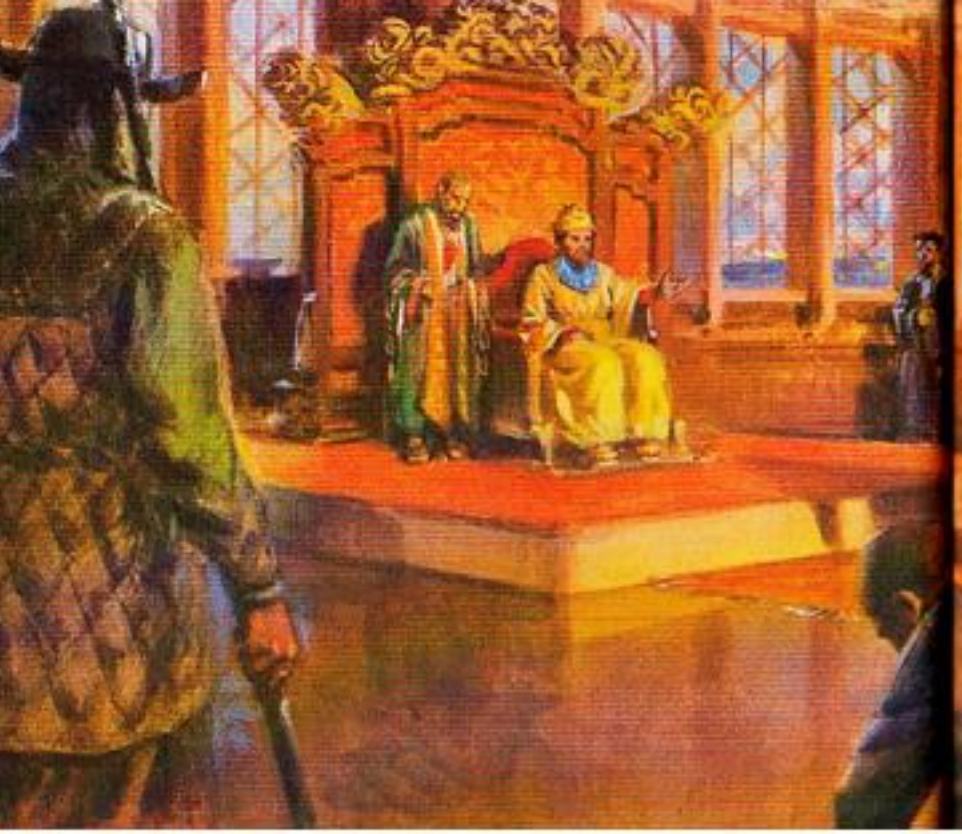

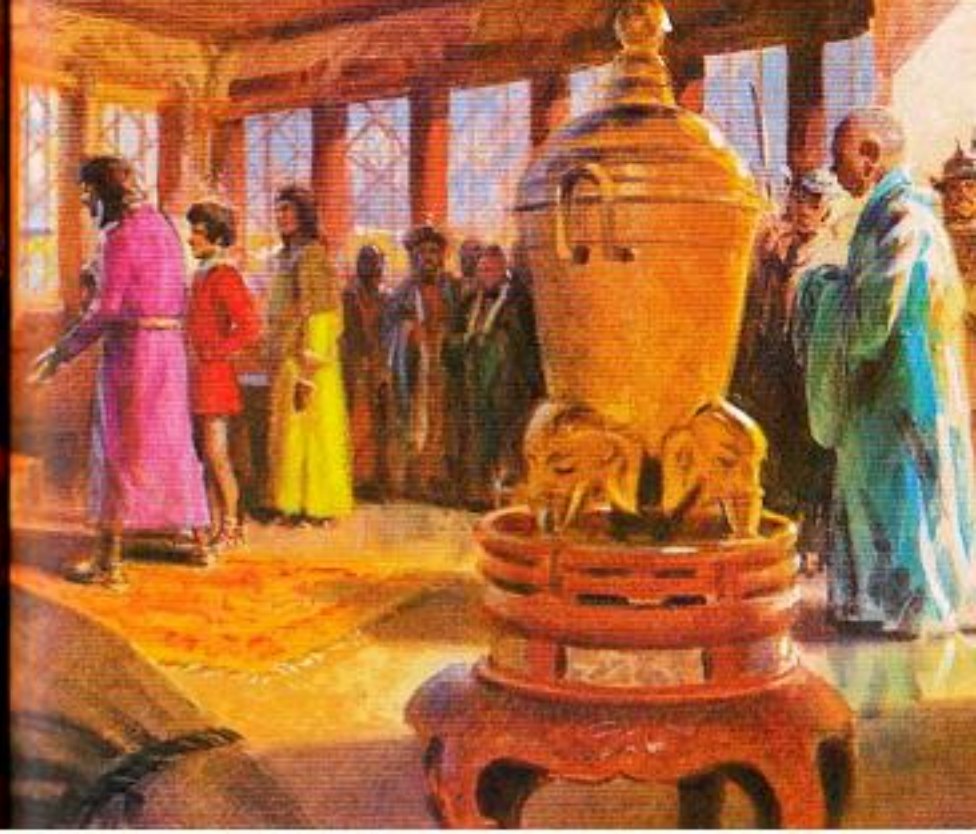

इस डाक प्रणाली के माध्यम से, ग्रेट खान ने वेनेशियन लोगों के आगमन के बारे में सुना, भले ही वे अभी भी उसके महल से काफी दूर थे.

अगले चालीस दिन, हालांकि वे कठिन रेगिस्तान में थे, लेकिन यात्री अब कुबला खान की सुरक्षा में थे. हर जगह उनका सम्मानित अतिथियों जैसे सम्मान होता था और उन्हें हर सुविधा और सुरक्षा मिलती थी.

जब वे आखिर शांगटू पहुंचे, तो खान का समर पैलेस एक अद्भुत दृश्य रहा होगा. उसे सफेद संगमरमर से बनाया गया था, और हॉल और कमरों को सोने से सजाया गया था.

अब मार्को पोलो पहली बार महान खान से मिला, और उसने सम्राट को एक अच्छा मानवीय इंसान पाया.

उसने लिखा, 'उनका कद ठीक है, वो न बहुत ऊंचे हैं और न ही छोटे, वो मध्यम ऊंचाई के हैं. उसका रंग गोरा, एक सुर्ख गुलाब की तरह है, और उनकी आंखें काली और सुंदर, नाक सुडौल और चौकोर है.'

ख़ान, पोप के पत्र और भेजे उपहार पाकर बहुत प्रसन्न हुए, और उन्होंने अपने अतिथियों का बड़े ही सम्मान से स्वागत किया.

उन्हें वेनिस से चीन तक की यात्रा में तीन साल से अधिक समय लगा था. समय-समय पर, निकोलो और माफ़ियो पोलो और युवा मार्को उन शहरों में हफ्तों या महीनों रहे जहां व्यापारियों के रूप में उन्होंने अपने धंधे को फ़ैलाया.

मार्को अब एक बीस साल का युवा था. वो खान के दरबार में सुरक्षित पहुंचने पर प्रसन्न था. वो शायद इतना खुश न होता अगर उसे इस बात का आभास होता कि वह अगले सत्रह वर्षों तक वहाँ रहने वाला था!

वह समर पैलेस में कुछ महीनों रहा. उसने शिकार अभियानों में भाग लिया जो खान का पसंदीदा मनोरंजन था.

उसने कोर्ट में जो कुछ देखा उसके बारे में लिखा. खान का एक 'पोर्टेबल महल' था, जिसे वो गर्मियों में शिकार के केंद्र के रूप में इस्तेमाल करता था. वो महल बांस की बेंत से बना था. उसे रेशम की रस्सियों द्वारा बाँधकर रखा गया था. एक तम्बू की तरह, उसे खोलकर खान के लिए अगले स्थान पर ले जाया जा सकता था.

मार्को को महान खान के जादूगरों में भी दिलचस्पी थी, जो तिब्बत और कश्मीर से आए थे. वे खान के पीने के कप को सबके सामने हवा में तैरा सकते थे, और वे शिकार के लिए अच्छा मौसम सुनिश्चित करने में भी सक्षम थे.

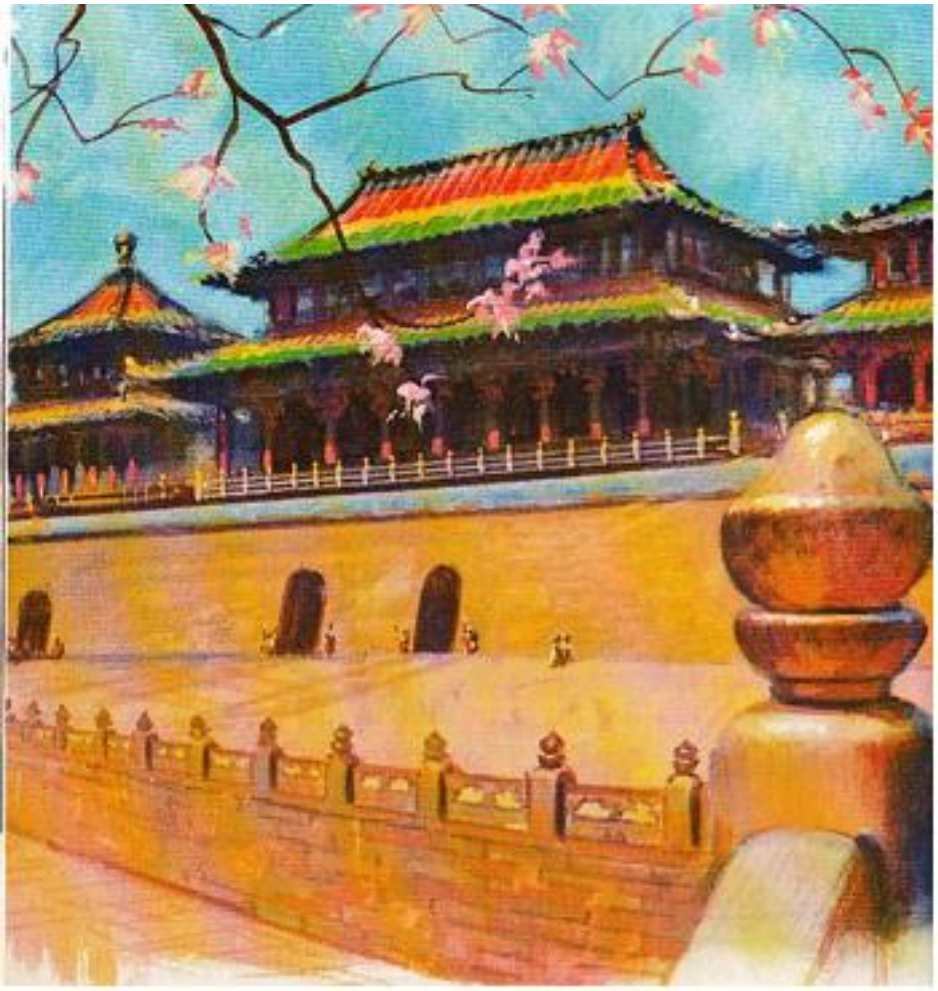

चीन की राजधानी खानबलीक थी, जो आज पेकिन के पास है.
गर्मियों में शिकार के बाद, खान और उनका दरबार मार्को को साथ लेकर राजधानी वापस चला गया.
मार्को, खानबलीक से बहुत प्रभावित था इसलिए उसने उसके बारे में बहुत कुछ लिखा. वो एक अद्भुत शहर था, जिसमें सुंदर सीधी सड़कें समकोण पर मिलती थीं.

पूरा शहर एक आयताकार दीवार से घिरा हुआ था. दीवार के बाहर दरवाज़े और कई मीनारें थीं, और प्रत्येक द्वार पर एक हजार सैनिकों का पहरा था.
शहर के केंद्र में एक महान घंटी थी जो हर रात बजती थी. तीसरी घंटी के बाद, लोगों को सड़कों पर जाने की अनुमति नहीं थी. तब किसी बेहद जरूरी काम से ही लोग बाहर निकल सकते थे.
कुबला खान का महल संगमरमर के एक एक ऊंचे मंच पर बना था.
उसकी छत चमकीले रंग की थी, जिसमें लाल, हरे, नीले और पीले रंग की टाइलें थीं. अंदर, दीवारों को सोने और चित्रों के सजाया गया था. शानदार बैंक्वेट हॉल (भोजन-कक्ष) में एक समय में छह हजार मेहमानों को खाना परोसा जा सकता है.

मार्को पोलो जल्द ही कुबला खान का चहेता बन गया.
खान ने महसूस किया कि मार्को ईमानदार और विश्वसनीय था.
मार्को मेहनती और परिश्रमी भी था, और उसने चीन की चार प्रमुख भाषायें सीखीं. उसके परिणामस्वरूप, मार्को से सम्राट, राज्य के मामलों पर सलाह लेने लगा. उदाहरण के लिए, मार्को ने तीन साल हैंगचोव में बिताए और खान को महत्वपूर्ण राजनयिक सेवा प्रदान की.

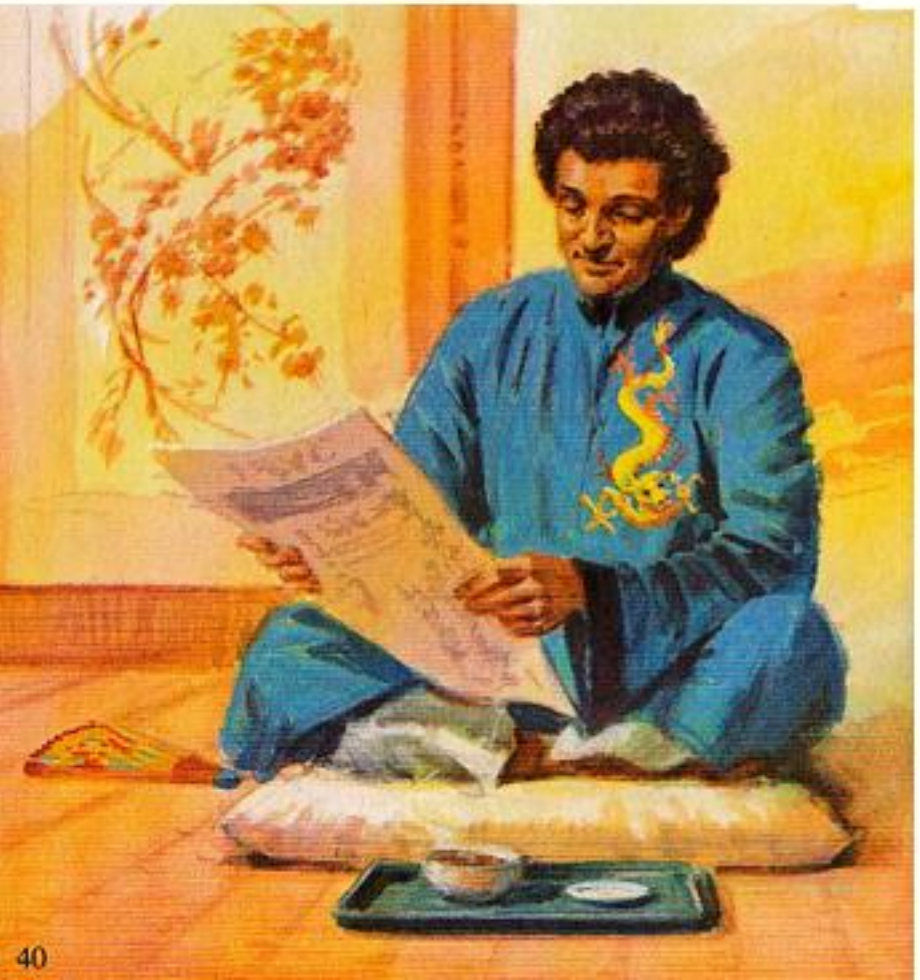

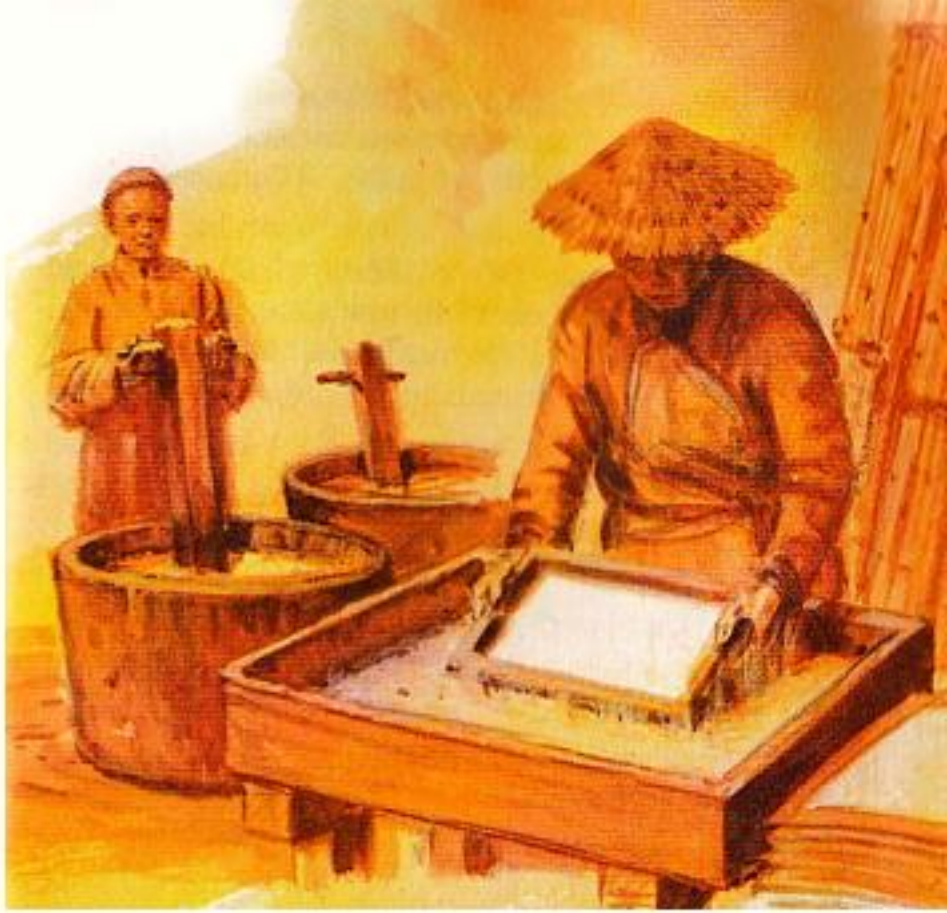

मार्को की हरेक चीज़ में दिलचस्पी थी, और वो उनके बारे में लिखता भी था. अन्य बातों के अलावा, उसने शहतूत के पेड़ों की छाल से बने "नोट के कागज़" के बारे में लिखा, जिसे पश्चिमी यूरोप में उपयोग किए जाने से सैकड़ों वर्षों पहले चीनी से इस्तेमाल कर रहे थे. इन कागज के नोटों पर लाल स्याही में शाही मुहर छपी होती थी, और उन्हें चीनी साम्राज्य में कहीं भी इस्तेमाल किया जा सकता था.
पर मार्को ने पुस्तकों की छपाई का कहीं उल्लेख नहीं किया, जिनका कुछ समय पहले चीनियों ने आविष्कार किया था.

खान को मार्को पोलो पर इतना भरोसा था कि उसे खानबलिक (पेकिन) से कई सौ मील (किलोमीटर) चीन के कुछ हिस्सों में महत्वपूर्ण व्यवसाय के लिए भेजा गया.

मार्को ने मलाया, सुमात्रा और सीलोन की यात्रा की, सीलोन को उन्होंने अपनी विभिन्न यात्राओं में कम-से-कम तीन बार देखा. उन्होंने सीलोन के नीलम पत्थरों (सफायर) का भी उल्लेख किया, जो आज भी प्रसिद्ध हैं.

मार्को ने कई साल बाद अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "ए डिस्क्रिप्शन ऑफ द वर्ल्ड" लिखी. इसमें उन्होंने उन देशों की तस्वीर खींची जिनकी उन्होंने यात्रा की थी.

कुछ स्थानों और चीजों का जिक्र उन्होंने सिर्फ अन्य लोगों से सुना होगा. शायद यह पुस्तक में बढ़ी-चढ़ी 'डींग' की जिम्मेदार होगी. कई लोगों ने उनके बढ़े-चढ़े वर्णनों पर यकीन नहीं किया.

वेनेशियन लोग मार्को को "इल मिलियन" बुलाते थे, क्योंकि वो चीज़ों को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर पेश करते थे. उन्होंने अक्सर सफेद घोड़ों की 'असंख्य संख्या', 'अपार धन' और 'सबसे बेशकीमती पत्थरों' का उल्लेख किया.

उनके अनुसार, तिब्बत में 'दुनिया के सबसे बड़े दुष्ट और बड़े डाकू' रहते थे.

न ही मार्को के वर्णित अजीब जानवरों पर विश्वास किया जा सकता है. निश्चित रूप से 'ग्रिफ़ॉन बर्ड', जो हाथियों को खाता था, उनकी कल्पना की उड़ान रही होगी. उन्होंने जिराफ और मगरमच्छ का भी वर्णन किया जिनसे आधुनिक दुनिया परिचित है.

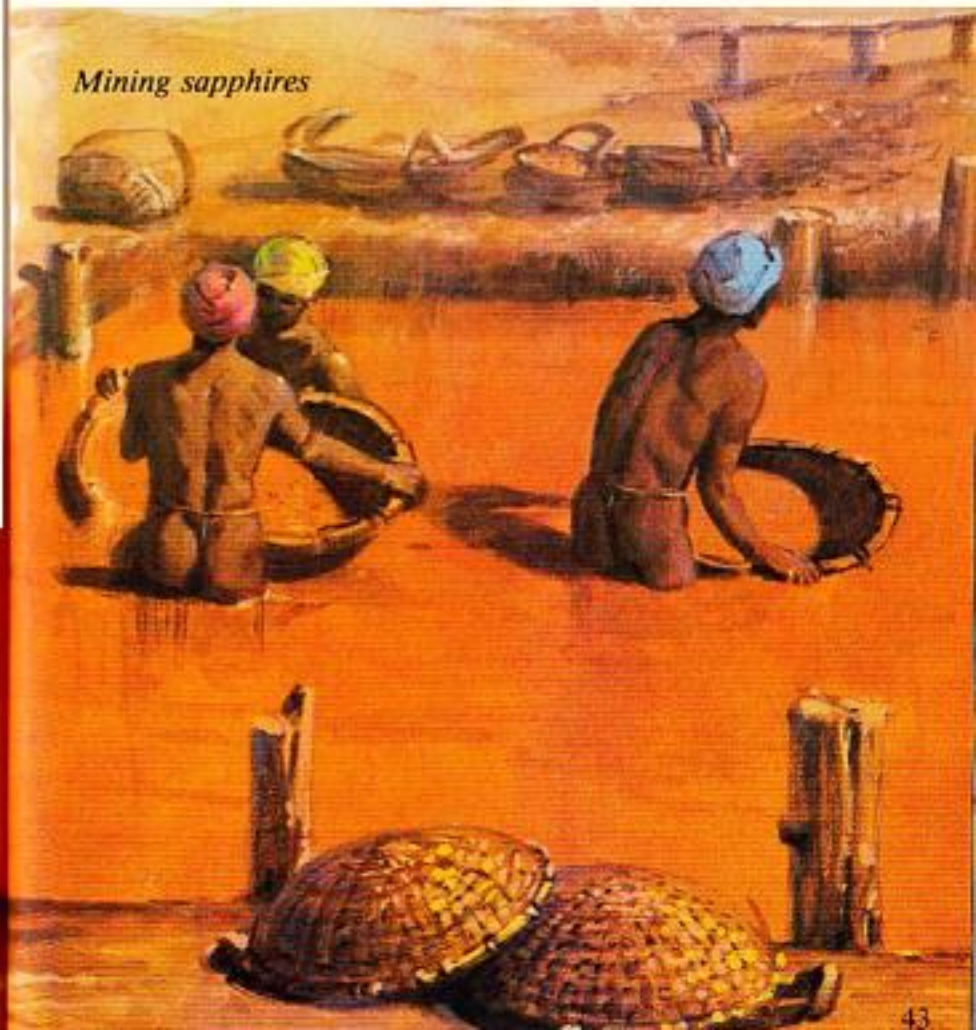

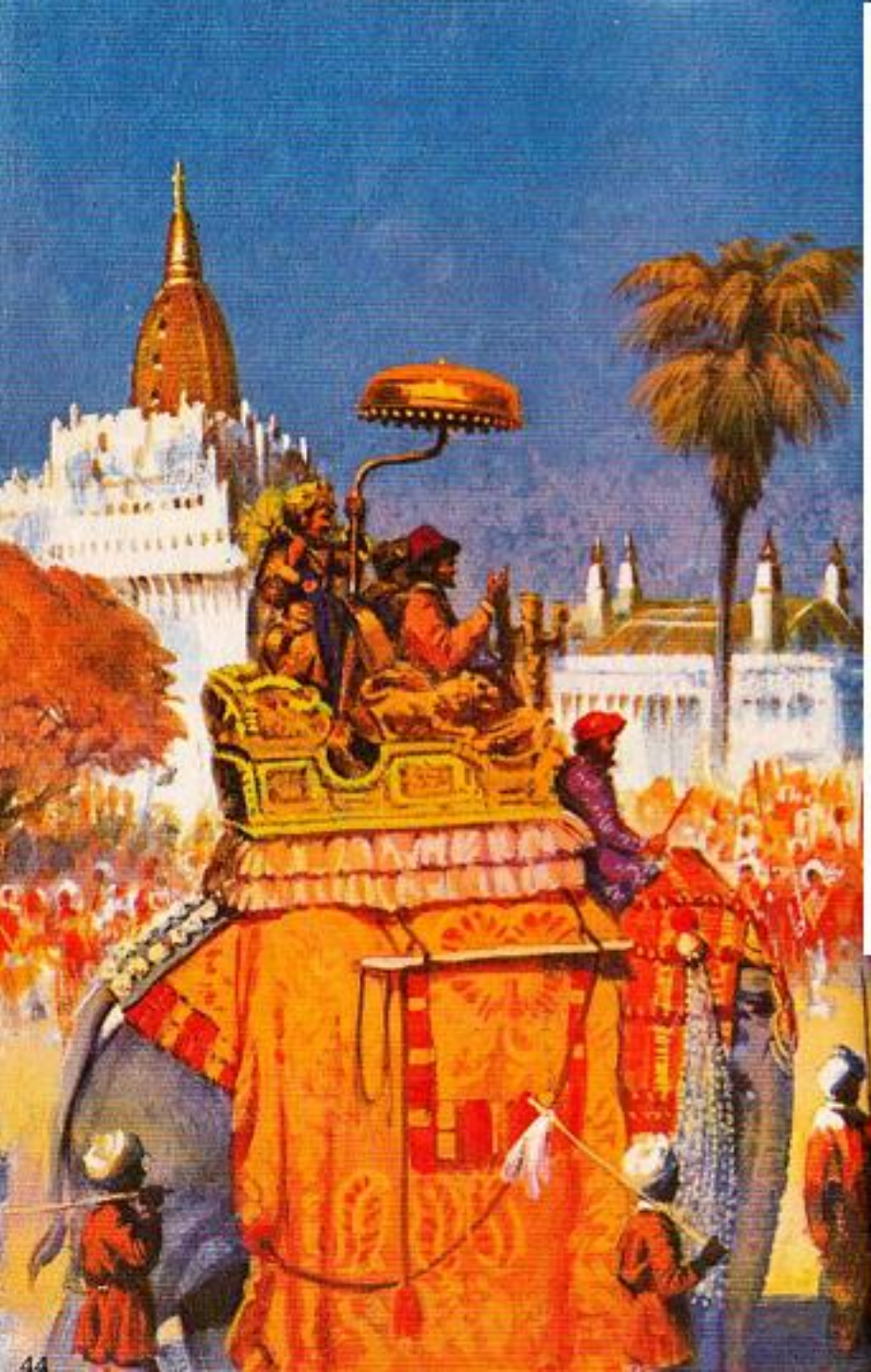

उनकी एक यात्रा उन्हें "बर्मा" ले गई. साढ़े तीन महीने की इस यात्रा में मार्को सैनिकों और नौकरों के साथ, खान के प्रतिनिधि के रूप में गए थे. उन्होंने करज़ान के प्रमुख शहर करज़ान, कान-डू और याची जैसे अद्भुत नामों के साथ स्थानों का दौरा किया.

मियां नामक स्थान पर, उन्होंने एक अद्भुत मकबरा देखा, जिसमें दो पिरामिड थे. एक पिरामिड चांदी से ढंका था और दूसरा सोने की एक इंच (25 मिलीमीटर) मोटी चादर से ढंका था. प्रत्येक के ऊपर एक सुनहरी गेंद थी, जो छोटी-छोटी घंटियों से घिरी हुई थी. हर बार जब हवा चलती तो घंटियां बजतीं थीं.

अन्य यात्राओं में उन्होंने उत्तर की ओर दूर तक यात्रा की, जहाँ उन्होंने बर्फ देखी और लोगों को खाल पहने, स्लेज में यात्रा करते हुए देखा. अपनी एक अन्य यात्रा में उन्होंने नरभक्षी लोगों के बारे में सुना, और उन्हें 'नृशंस क्रूर भोजन के लिए पुरुषों को मारने वाला' बताया. उन्होंने एक पेड़ के बारे में बताया जिसमें से शराब (ताड़ी) टपकाती थी. उस पेड़ से जो आटा मिलता था - आज उसे हम साबूदाना कहते हैं.

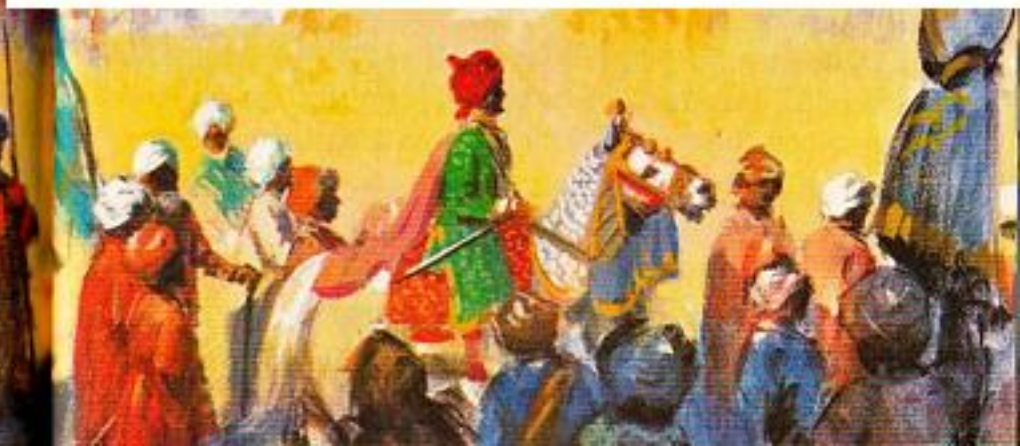

चीन में सत्रह साल बाद, मार्को पोलो काफी अमीर बन गया. फिर वो वेनिस लौटने का विचार करने लगा. कुबला खान बूढ़ा हो रहा था, और मार्को को डर था कि महान खान की मृत्यु के बाद उसके साथ लोग अच्छा सलूक नहीं करेंगे.

निकोलो और माफ़ियो भी बूढ़े हो रहे थे. वे भी चीन में काफी सफल बने, पर अब अपने जीवन के बाकी हिस्सा अपने देश में बिताना चाहते थे. कुबला खान उन्हें जाने देने से हिचक रहा था. मार्को पोलो मात्र उनका सबसे भरोसेमंद नौकर नहीं था, खान उसके शौकीन भी थे. तभी एक चीनी राजकुमारी फारस के राजा से शादी करने के लिए होर्मुज़ के पास समुद्र की यात्रा करने की तैयारी कर रही थी.

उसे ले जाने के लिए आए राजदूतों ने राजकुमारी की अनुमति ली कि तीनों विनीशियन भी उनके साथ वापसी यात्रा पर जा सकते हैं, क्योंकि वे नेविगेशन में चतुर थे.

कुबला खान सहमत हो गए, और फिर चौदह जहाजों के एक बेड़ा निकला. वे वर्ष 1292 में चीन से रवाना हुए. मार्को अब अड़तीस साल का हो गया था. यात्रा में कई बार देरी हुई, और फारस की यात्रा दो साल तक चली.

आखिर में जब मार्को पोलो फारस पहुंचा, तो उसने सुना कि कुबला खान की मृत्यु हो गई थी. तीनों विनीशियन का अब चीन वापिस लौटने का कोई कारण नहीं था.

फारस के युवा राजा ने उन्हें सुनहरे पासपोर्ट दिए, जिसके तहत उन्हें घोड़े, रसद, और रक्षा करने के लिए एक गार्ड मिले. इन पासपोर्टों के बिना, इस अंतिम चरण में उनके मारे जाने का बहुत खतरा होता. 1295 में वे आखिरकार वेनिस पहुंचे जिसे चौबीस साल पहले उन्होंने छोड़ा था.

इतने लंबे अर्से तक दूर रहने के कारण किसी ने उन्हें पहचाना तक नहीं. वे यात्रा के पुराने कपड़े पहने हुए थे और वे इतालवी बोलना तक लगभग भूल चुके थे. कुबला खान के महलों की कहानियों पर लोगों ने अविश्वास किया और वेनिस के व्यापारियों ने उनका मज़ाक उड़ाया.

हालाँकि, तीनों यात्री उतने गरीब नहीं थे, जितने वे दिखते थे. जब उन्होंने अपने जर्जर कोट की सिलाई को खोला तब अंदर से सोना और गहने निकले.

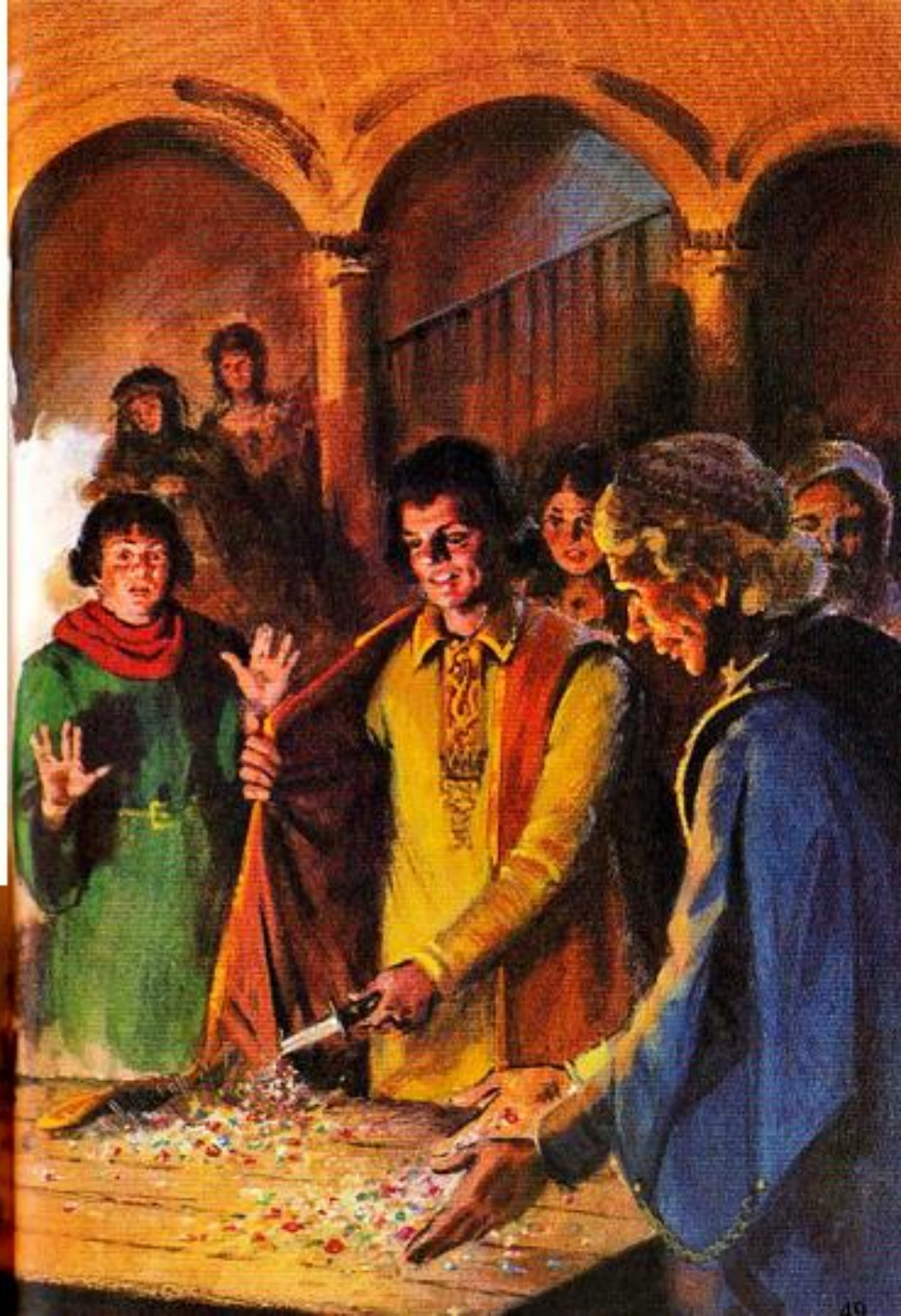

मार्को पोलो की कहानी कैसे लिखी गई?

शायद मार्को के पास एक अद्भुत स्मृति थी या, शायद उसने अपने अनुभवों के नोट्स रखे, क्योंकि वह उन सभी अजीब और असामान्य तथ्यों का प्रमाण देने में सक्षम था जो उसने पुस्तक, "ए विवरण ऑफ द वर्ल्ड" में लिखे थे.

हम सभी जानते हैं कि यह किताब रूस्तिकेलो नामक एक व्यक्ति द्वारा लिखी गई थी. रूस्तिकेलो, मार्को पोलो के काल में जेनोआ में एक कैदी था. जिओनी और वेनिस के बीच एक समुद्री लड़ाई में उसे गिरफ्तार किया गया था. मार्को पोलो ने विनीशियन जहाज़ों में से एक की कमान संभाली थी.

1299 में वो अपनी यात्राओं के बाद दूसरी बार वेनिस लौटा.

फिर वो स्थाई रूप से वेनिस में बस गया.

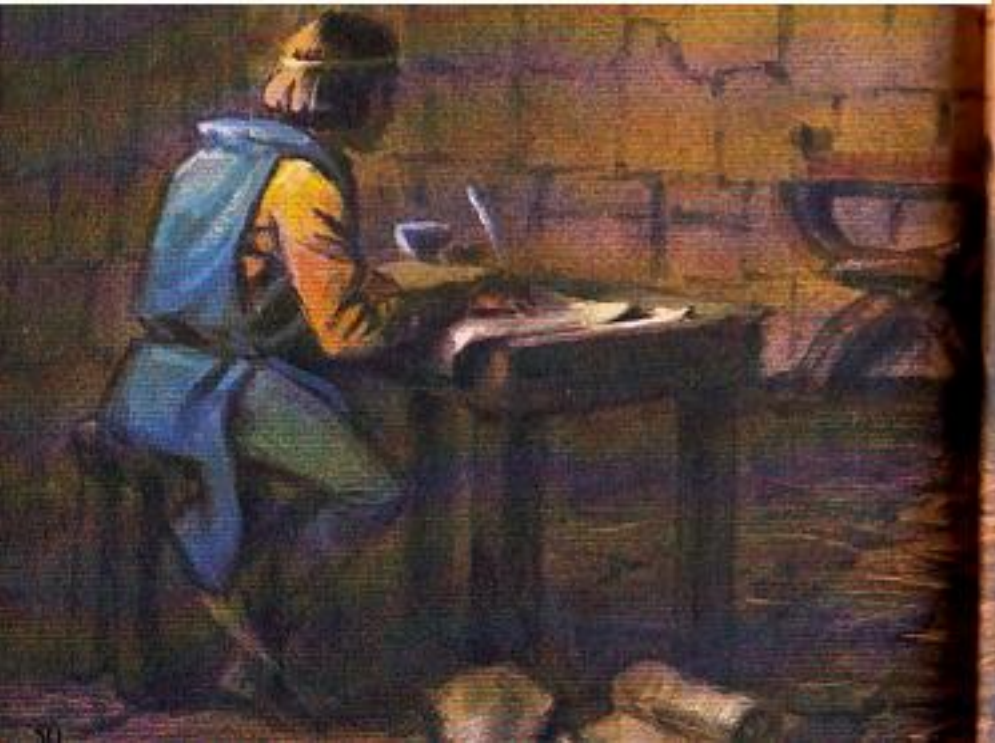

उसकी तीन बेटियाँ हुईं. हम उसके "वसीयतनामे" से जानते हैं कि जब 1324 में वो मरा, तब वो अमीर नहीं था. इसलिए अपनी यात्राओं में उसने जो महान धन कमाया था, वह ज़्यादा दिन नहीं चला था.

उसकी किताब में पूरब के जीवन के अद्भुत वर्णनों ने मार्को पोलो को, इतिहास में एक ख़ास जगह दी. उनका नाम हमेशा एक उल्लेखनीय यात्री और अन्वेषक के रूप में याद किया जाएगा.

समाप्त